भगवत् कृपा

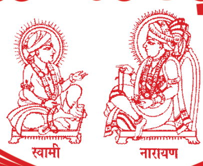

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 32 अंक : 5 5.9.2009 शनिवार (सितंबर – अक्तूबर) शुल्क – प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

*शरद्पूर्णिमा, दीवाली एवं नूतन वर्ष के आगमन पर...

हर वर्ष की भाँति अश्विन – शुक्ल के नवरात्र आते ही हर्षोल्लास की मंद - मंद ध्वनि कानों में गूँजने लगती है। साथ ही, गुणातीत समाज के हर एक मुक्त को अपने प्रगट प्रभु को अंतर से प्रार्थना करके चैतन्य की प्रगति के लिए एक के बाद एक अवसर प्राप्त होते हैं – जिसकी शुरूआत तो 'विजयादशमी' से ही हो जाती है।

'विजयादशमी' यानि – वह दिन जब श्री रामजी ने रावण का वध किया और सीताजी यानि – 'भक्ति' के मूर्त स्वरूप को विजयी बनाया! यूँ 'भक्ति' द्वारा 'आसुरीवृत्ति' की पराजय हुई! और... ऐसे सांकेतिक दिन ही गोंडल – अक्षरमंदिर में गुरुवर्य योगीजी महाराज ने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को **पार्षदी दीक्षा** देकर, मानो अनेक चैतन्यों को एक माध्यम बख्शिश में दे दिया, जिससे कि मन - बुद्धि के आतंक से छूट कर स्वरूपलक्षी आत्मीयता से जीवन जीता एक **'आध्यात्मिक'** नहीं, बल्कि **'दिव्य'** समाज धरती पर साकार हो।

इतिहास साक्षी है कि –

*मानवजाति की उत्क्रांति में चैतन्य का जैसे - जैसे विकास होता गया वैसे - वैसे उसके अनुरूप ऐसे अवतार स्वरूपों ने आविर्भाव और अवतरण पाकर अनेक आत्माओं की भूख को संतुष्ट करके, जीव की पात्रता के मुताबिक परमानंद का सुख अर्पण किया और जीतेजी ही जीवनमुक्ति मनवा दी। फिर भी, जीव की मूलभूत वृत्ति ने, 'कामना' और 'अहं' के रूप में या 'गुण के मान' या 'ऐश्वर्य के राग' के रूप में, समय - समय पर विघ्न डाल कर महामुक्तों को भी स्थिति में से डिगा दिया। क्योंकि, सनातन ब्रह्म के विचार तक अच्छी खासी प्रगति जरुर हुई, लेकिन वहाँ वह विचारधारा थम गई। कई सिद्ध पुरुष और अवतार 'ब्रह्मनिर्वाण' को पाए भी और जीव का प्रवेश भी करवा पाए, परंतु नारायण के परम तत्त्व के साथ अखंड एकता – साधर्म्य को नहीं पा सके। कई ऐसे असाधारण व्यक्तित्वों को 'परब्रह्म' का आभास तो हुआ, लेकिन उनके संपूर्ण और समग्र प्रकाश को झेल नहीं सके। वहाँ **'साकार अक्षरब्रह्म'** के साधर्म्य की अनिवार्यता भगवान स्वामिनारायण ने स्पष्ट की और... अनादि अक्षरब्रह्म को, **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीता-नंदस्वामी** के रूप में, साथ लाकर अध्यात्म में एक स्वर्ण युग की शुरूआत*

* *ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के आशीर्वचनों से संकलित...*

*की। यूँ, **साकार ब्रह्म का प्राकट्य दिन** यानि मानवजाति के लिए आध्यात्मिक पूर्णता के शिखर पर पहुँचने की नींव का कार्य! इसकी शुभ शुरूआत जूनागढ़ के उस जोगी ने ब्रह्मविद्या के दो सौ सिद्ध चैतन्य तैयार करके, **'आत्यंतिक कल्याण'** की – **'मूर्ति की सिद्धदशा'** की परम गति और प्राप्ति जीतेजी सुगम बना कर की। तभी तो, अध्यात्म के मार्ग पर चलते श्रेयार्थियों के लिए **शरदपूर्णिमा, गुणातीत परंपरा की 'गंगोत्री'** के रूप में, अद्वितीय स्थान पर रही है। यूँ, सनातन साक्षात् स्वरूप के साथ के तादात्म्य का - जीवनमुक्तों के रूपांतर का – ज्ञानसमाधि का दिव्यज्ञान सर्वप्रथम 'अक्षरब्रह्म' ने प्रत्यक्ष किया और अखंड रखा।*

इस प्रकार की पारमेश्वरी शक्ति के साक्षात्कार वाली अनुभूति, मूलप्रकृति का संपूर्ण रूपांतर करके, प्रभुमय और प्रभुप्रेरित जीवन देती है और वहाँ दिव्य गुण सहज ही उपलब्ध हुए दिखाई देते हैं। कुंडलिनी शक्ति के सिद्धपुरुषों को सिद्धदशा की 'अस्मिता' हमेशा रहती है ही और वहाँ प्रभु के सर्वोपरिभाव की गौणता दृश्यमान होती है। अतः जड़प्रकृति का रूपांतर वहाँ शक्य नहीं है।

लेकिन, ये 'अक्षर अनंत कला से खेले... अनंत रूप धारे...' ऐसे स्वाधीन और स्वायत्त होने के बावजूद, परात्पर स्वरूप को पर का पर रख कर स्वामीसेवकभाव एवं निरपेक्षभाव से वर्तते हैं।

*उसी गुरु परंपरा की अमर विरासत – जीतेजी ही अक्षरधाम का दिव्य सुख प्राप्त करने की विरासत, प्रगट की निष्ठा वाले ऐसे संतों और हरिभक्तों को संघनिष्ठा के रूप में मिली है और इस दिव्य आध्यात्मिक समाज के ज्योतिर्धर, **जीव ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ सके,** इस हेतु जगह - जगह पर परम सत्यनिष्ठा का कार्य करते हुए, देश - विदेश में ऐसा सानुकूल माहौल बना कर, सुहृद्भाव के प्याऊ अलग - अलग स्थानों पर खड़े करते जाते हैं।*

और... इसी हेतु संबंध वाले मुक्तों पर मानो अकारण कृपावर्षा करके, गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुणातीत परंपरा में ऐसे ही एक और वारिस की भेंट देने के लिए शरदपूर्णिमा के ही महामंगलकारी दिन **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को **भागवदी दीक्षा** दी थी!

*एक ही गुरु के पाँच - सात समर्थ और समकक्ष शिष्यों ने, अपने आप को न्यून समझ कर, आपस में मिलजुल कर, प्रभु का काम किया हो – ऐसा उदाहरण आध्यात्मिक इतिहास के पन्नों में कहीं नहीं मिलता... बल्कि एक ही गुरु के शिष्य होने के बावजूद, वे (शिष्य) अपनी - अपनी अलग पॅटर्न और निजी अस्मिता को पकड़े रखने के कारण, एक - दूसरे से कई मील की दूरी बना कर, अपनी - अपनी संस्थाओं, केन्द्रों और अनुयायिओं के घेरे में ही झूमते हुए नज़र आए हैं। लेकिन, **गुणातीत समाज में गुणातीत परंपरा के इन वारिसदार – प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी जैसों ने इस बात पर सेरा लगा दिया है।***

*गुणातीत ज्ञान का यह एक विशिष्ट प्रकार का दर्शन ही कहा जाए कि **उत्तर और दक्षिण ध्रुव जैसे विरोध प्रकृति वाले कई समूह एक ही स्थान पर, एक ही समय, भूतकाल के समग्र प्रसंगों को मानो भुला कर, सुहृद्भाव के प्रतीक के रूप में मिलजुल कर काम करते दिखाई दें।** ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की कल्याण रीति में ऐसे भव्य दर्शन होते रहे हैं और **भविष्य में भी वे जरुर करवाएंगे – यह पक्का है।** यहाँ चूहा और बिल्ली, सांप और नेवला, बाघ और बकरी एक ही जगह पर, एक ही समय पर अपनी - अपनी स्वाभाविक प्रकृति छोड़ कर, दिव्यचेतना की - नादसृष्टि की आत्मीय भावना वाली चैतन्य प्रकृति में, निर्गुणभाव में रहते हुए और स्वामीसेवकभाव रखते हुए, प्रगट की अनुवृत्ति में वर्तते दिखते हैं और... जो मन में या बुद्धि में न बैठे एवं जिसे दुनिया भी न मान सके, यूँ दूध में शक्कर जैसे मिलन और भव्य दर्शन को 'प्रगट प्रभु' साकार करते हैं। यह है गुणातीत ज्ञान की – 'वड़वानल अग्नि' के समान सर्वोपरि स्वरूप की - प्रकृति के परिवर्तन की सर्वोत्तम कल्याण रीति! **हमारे जीवभाव***

की प्रकृति की ऐसी विविध कनकिओं को संपूर्ण पिघला कर, जीव को ब्रह्मरुप करके हम सभी को परब्रह्म में कब और कैसे ये स्वरूप जोड़ देंगे यह एक पहेली है, जो हम सभी के लिए एक आश्चर्यकारक घटना के रूप में रहेगी – भविष्य में लगेगा। *सो, हम केवल इन स्वरूपों की ओर ही दृष्टि रखें, जिससे कि वे हमारा जल्द से जल्द ऐसा दिव्य रूपांतर कर सकें और पात्र बनाएं!*

तो, हे स्वामिजी! हमें भी आप अपने जैसा सेवकभाव व आत्मीयभाव जरुर-जरुर सिद्ध करवा देना! कैसे भी संजोगों में आपसे व आपके भक्तों से लापरवाह न हों... एक ही बात के लिए हमारे गुरु को हमें बार-बार टोकना न पड़े... हमारे वर्तन के कारण आपको अपनी देह पर दोबारा कभी ऐसा शस्त्र उठाना न पड़े... यही आपके दीक्षा दिन पर प्रार्थना!

साथ ही – आज ही के दिन प.पू. काकाजी महाराज के आध्यात्मिक वारिस **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य** भी संबंध वाले मुक्तों को यही प्रतीति कराता है कि शरदपूर्णिमा यानि – वो मंगलकारी दिन – जब पूर्ण ब्रह्म के साधर्म्य को पाई एक ऐसी प्रभुधारक विभूति की हमें बिना किसी साधन के प्राप्ति हो गई, जो हमें जन्मों की जड़ता से मुक्ति दिलवाएगी। तभी तो, आज विदेश की धरती पर विराजमान रह कर, वे प.पू. काकाजी की महिमा की ख़ुशबू फैलाते हुए, अनंत को न केवल कल्याण के मार्ग पर ले जा रहे हैं, बल्कि अपना संबंध देकर जीतेजी अक्षरधाम के सुख का भोक्ता बना रहे हैं। ऐसे परम चैतन्यसुहृद् का ऋण हम भला कैसे चुका पाएंगे? बस, प्रार्थना ही किया करें कि प.पू. काकाजी की मर्जी के अनुसार हमें चलाने के लिए आप जिस कदर निरंतर प्रयत्नशील हैं, वह परिश्रम सफल करने दिल की सच्चाई से हम सब भी चल पड़ें!

यूँ, ऐसे परम पवित्र पर्वों पर अंतर की प्रार्थना करते हुए **दीवाली** का मंगल अवसर भी द्वार खटखटाने लगता है। सभी गुणातीत स्वरूपों की अंतर की एक ही चाहना है कि प्रभु को ही सर्व कर्ता-हर्ता मानते हुए हम सब, आपस में खूब मिलजुल कर, एकत्वभाव से 'दिव्यता' की भूमिका में प्रवेश कर जाएं... फलस्वरूप, भगवान व संत की कृपा हमें मनरूपी रावण की कालिमा से निकाल कर, एक ऐसा प्रकाशपुंज देगी, जो कि हमें **नूतन वर्ष** में ले जाएगा; जहाँ हम किसी के भी प्रति के अभिप्राय, मान्यता, पूर्वाग्रह को भुला कर नए प्रकाश में नए उत्साह से, दिव्यपथ पर अग्रसर होंगे... गुणातीत सत्पुरुष तो चिरंजीव हैं, सो ऐसी **शाश्वत् विभूति प.पू. काकाजी महाराज के आशीर्वाद** आज भी वैसे ही जीवंत हैं। आइए, **नए वर्ष** निमित्त 1973 में उनके द्वारा बरसी आशिष झेलें...

भगवान स्वामिनारायण ने
'कल्याण' *और* ***'आत्यंतिक कल्याण'***, ***'मुक्ति'*** *और* ***'आत्यंतिकी मुक्ति'*** *के बीच*
आसमान और जमीन जितना फर्क बताया है।
कल्याण तो प्रभु के हर एक आश्रित का है ही,
लेकिन ***'आत्यंतिक कल्याण' के लिए 'परमात्मा' की कहो या परमतत्त्व की निष्ठा अनिवार्य है***
और
हम सभी 'आत्यंतिकी मुक्ति' के लिए लगे हुए हैं...
परमतत्त्व की निष्ठा में यदि तनिक भी कसर रह गई हो
तो वह दूर करने के लिए नए वर्ष के प्रारंभ में गुरुचरणों में प्रार्थना करें।
लेकिन, इसके साथ यह स्पष्ट समझ लें कि ***ऐसी प्रत्यक्ष की निष्ठा*** *यानि –*

'किसी व्यक्तित्व में प्रतीति नहीं, बल्कि दिव्यविग्रह सहजानंदस्वामी के मूलभूत स्वरूप की तत्त्वानुभूति!!'

केवल स्वरूपानुभव सिद्धदशा करा कर रिद्धि-सिद्धि भी दे दे

और

*उसका सत्संग वैभवशाली भी लगेगा, परंतु वह **'ब्राह्मीस्थिति'** नहीं ही है।*

उसके लिए तो विचार या संकल्प की समग्र रूप से संपूर्ण निर्मूलता चाहिए –

ताकि मायिक विचार और संकल्प का दोबारा जीवित होना – उत्थान पाना – जाग्रत होना संभव ही नहीं हो।

जैसे आम पक कर अपने-आप गिर पड़ता है, यूँ उसकी वासना और स्वभाव निर्मूल हो गए हों।

यहाँ केवल 'गुणातीतभाव' में ही दृढ़ रहा जाता है

और

मानसिक एवं भावात्मक भूमिका संपूर्ण रूप से विलीन हो जाती है।

'संत' को ही अपनी आत्मा माना जाता है

और

अंतर का 'साक्षी भेदन' होते ही मायिक मन और चित्त यहाँ पिघल जाते हैं और दिव्य बनते हैं।

स्वरूप के साथ ऐसा दिव्य ऐक्य प्राप्त होते ही उसे समग्र सत्संग दिव्य लगते हुए,

महाराज के सर्वोपरि कर्तापन एवं प्रगटपन का ऐसे मुक्तों में अनुभव होता है और... उसका आनंद अखंडित रहता है।

ऐसी दिव्य एकता की पराकाष्ठा – निरपेक्ष ज्ञान, सेवा, प्रेम और भक्ति का समन्वय

गुरुदेव की कृपा से हर एक को जल्द से जल्द सिद्ध हो –

नव वर्ष के इस आध्यात्मिक संकल्प को, स्वामिश्रीजी और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप,

ज्ञानसमाधिरूप में ब्राह्मीस्थिति करवा कर, साकार कर दें – यही नए वर्ष के नए दिनों में आजिज़ी।

*– **प.पू. काकाजी महाराज**, 1973*

अलविदा - आनंदस्वामी (योगेश्वरस्वामी)!

प.पू. योगीबापा को उपहार में मिले 'सांकरदा' गाँव के हमारे मंदिर के संत पू. आनंदस्वामी (पू. योगेश्वरस्वामी) **1 अगस्त** को अचानक अक्षरधाम सिधारे!

स्वाभाविक है कि प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब और प.पू. दिनकरभाई की तरह हमें 'चैतन्य का दर्शन' न हुआ हो, सो आत्मीयता के कारण ऐसी घटना हमें बेचैन कर देती है। **ऐसा क्यों हुआ और वैसा क्यों नहीं – ऐसे कई कितने ही प्रश्न मन में उठें।** लेकिन, उनका हल बौद्धिक रूप से कभी भी मिल नहीं सकता।

दूसरी ओर – प.पू. बापा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे पुरुषों की गोद में रहने के बावजूद भी हम **'अपनी और दूसरे की आत्मा को देखें और जानें'** ऐसे चैतन्यदर्शी नहीं हुए – यह हमारी कैसी कसर रही? – उसका यहाँ एक दर्शन भी है। देखेंगे तो पाएंगे – हमें मिले ये पुरुष ऐसी घटनाओं के समय हमारे लेवल पर आकर अपना चेहरा गंभीर जरुर बनाए रखेंगे, लेकिन कभी भी विचलित होते दिखाई

नहीं देंगे। क्योंकि, वे जीव की ऐसी गति को – प्रगट प्रभु की अगम्य लीला को – जानते – देखते होते हैं। सो, हमें तो ऐसे प्रसंगों पर केवल मौन रख कर कुछ अभिप्राय बांधे - करे बिना भजन ही किया करना है – जिससे हमें बल मिलता रहे।

बाकी, पू. आनंदस्वामी तो हमारे एक एसॅट कहे जाएं। **'माणावदर'** का सारा गुणातीत समाज आज भले ही अलग - अलग प्रवाहों में बंटा हुआ दिखाई देता है, लेकिन जैसे सोरठ – गुणातीत का प्रदेश कहलाता – वैसे ही, पू. बापा के समय से, 'माणावदर' का मंडल यानि **'दादुभाई साहेब का ही गोकुळिया (प्रेमी) मंडल'** – के रूप में पहचाना जाता और... हम सभी ने जब दीक्षा ली, उस समय बापा कहते – *'माणावदर में अट्ठारह मुक्तों ने देह धरी है।'*

प.पू. बापा ने 51 संत बनाने की जब अलख जगाई, तब सोरठ के सिंह समान **'छोटे दादुभाई साहेब'** कहे जाते – **पू. हरिभाई साहेब** उर्फ **'भाई'** के पास क़वायद लेकर हम सभी के साथ पू. योगेश्वरस्वामी 61 में साधु होने को तैयार हुए।

लेकिन, **केवल प्राकृत बुद्धि से मूल्यांकन करते संस्था के मुख्य गिने जाते कार्यकर्ताओं ने 'संस्था में दादुभाई की स्ट्रॅन्थ बढ़ जाएगी' – यूँ भरमा कर माणावदर के इन युवकों को 'साधु' नहीं बनाने की पैरवी करी। लेकिन योगीबापा तो 'कामिल काबिल सब हुन्नर तेरे हाथ' ऐसे गुणातीत संत – तो आख़िर उन सभी को पटा कर इन मुक्तों को दीक्षा दी ही!**

तब से **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** की सेरेछाया में रह कर जीवन की अंतिम क्षण तक सभी के साथ आनंद करते हुए, निर्दोषबुद्धि सहित – खास तो 'सत्यकाम' की तरह स्वामी के वचन से गौशाला की सेवा करके – पू. योगेश्वरस्वामी ने जीवन धन्य कर लिया और स्वामिश्रीजी के पास जाकर प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी के चरणों में बैठ गए!

प.पू. गुरुजी कहते हैं –

'आनंदी और खुशमिज़ाज़ होने के कारण ही तो प.पू. पप्पाजी ने उनको (पू. योगेश्वरस्वामी को) 'आनंदस्वामी' नया नाम दिया। हाँ, आनंदी और खुशमिज़ाज़ होने के साथ ही, वे बुद्धिशाली भी थे – तभी तो उन्होंने मंदिर के क्रियायोगों में अपनी दृष्टि स्वामी की ओर ही रखी थी। यहाँ मुझे एक प्रसंग याद आता है –

मैं सांकरदा रहता था। मुझे कुछ काम था या बाहर जाना था। सो, मैंने उनसे इस बारे में पूछा - करा और उन्होंने उसकी 'हाँ' करी। लेकिन, थोड़े समय के बाद आकर मुझसे बोले – 'मुझे यह जमेगा नहीं।' मुझे तो – 'इसे किसी ने बहकाया...' ऐसे कई - कितने विचार आ गए। मैंने उनसे पूछा भी कि पहले तो उन्होंने फट् से 'हाँ' कर दी थी और अब क्या हुआ। लेकिन, उन्होंने मुझसे कहा कि वचनामृत में महाराज ने कहा है न कि –

कोई बड़ा संत हमें कुछ कहे और हमें वह जमता न हो, पर उस समय तुरंत ना नहीं करना; तब तो 'हाँ' ही करनी। फिर समय के रहते कहना कि मुझे ये नहीं जमेगा। इसलिए मैंने तब 'हाँ' करी थी, लेकिन अब ये प्रार्थना करी है।

यह सुनते ही मुझे उनका बहुत गुण आया कि छोटे हैं, लेकिन कैसा विवेक है?'

ऐसी तो उनकी कई बातें – प्रसंग होंगे – उनकी स्मृति करा करें और उनमें से प्रेरणा पाकर उन्हें धन्यवाद - धन्यवाद किया करें... ❑

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव **‘योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव’** के रूप में मनाएंगे; जब **‘एकता ही एकांतिकभाव’** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।

प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की जीवंत स्मृतिरूप **‘गुणातीत समाज’** को चिरंजीव करने, उसकी अखंडता एवं एकता बनाए रखवाने के लिए प.पू. गुरुजी खूब लगे हुए दिखाई पड़ते हैं! सो, हम भी ‘गुरुभक्ति’ अदा करने का यह मौका न चूकें...

अतः **प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव, जो आपको भीतर तक छू गए हों, उन्हें हिन्दी / अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें**, जिससे कि ‘भगवत् कृपा’ के इस स्तंभ के अंतर्गत वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

‘योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!’

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ **‘યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ’** રૂપે ઊજવીશું; જયારે **‘એકતા એ જ એકાંતિકપણું’**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.

પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની જીવંત સ્મૃતિરૂપ **‘ગુણાતીત સમાજ’**ને ચિરંજીવ કરવા, એની અખંડતા અને એકતા જાળવી રખાવવા પ.પૂ. ગુરૂજી ખૂબ મંડયા દેખાય છે. આપણે પણ ‘ગુરૂભક્તિ’ અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...

તો, **પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો કે જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય, એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો**, જેથી ‘ભગવત્ કૃપા’ના આ સ્તંભ હેઠળ એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o ‘भगवत् कृपा’
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, ‘ताड़देव’, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्सः 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

૨ ઑગષ્ટ '૦૯

સહજાનંદસ્વામી મહારાજની જય.
ગુણાતીત સમાજની જય.
મુક્તાક્ષર પુરુષોત્તમની જય.

પ.ભ. આનંદીદીદી અને સર્વ ભક્ત મંડળ,
જય સ્વામિનારાયણ.

આપ સહુ ભેગા મળી ૨૦૧૨માં પ.પૂ. ગુરુજીનો અમૃતપર્વ ઊજવી રહ્યા છો. પત્રિકામાં ગુરુજીના માહાત્મ્ય દર્શનનો વિભાગ શરૂ કરી સુંદર શરૂઆત કરી રહ્યા છો.
હું ગુરુજીના સંપર્કમાં જ્યારે તેઓએ દીક્ષા ગ્રહણ નહોતી કરી ત્યારે આવ્યો હતો.
તેમને મેં દિલીપ સ્વરૂપે જોયા હતા.
ત્યાર બાદ સાધુ થયા ત્યારે પણ જોયા
અને
આજે દિલ્હી મંદિરમાં બિરાજતા સહુનાય ગુરુજી સ્વરૂપે પણ દર્શન કરી રહ્યો છું.
જેમ મહારાજે ગુણાતીતાનંદસ્વામીને જૂનાગઢ મોકલ્યા ને નવાબને આપેલો કોલ પૂરો કર્યો.
તેમ
પ.પૂ. કાકાશ્રીના અપરંપાર હેતને લીધે તેમના વચને ગુરુજી દિલ્હી ગયા.
તો તે 'વચન ભેળી મૂર્તિ જાય' તેમ **કાકાશ્રી અખંડ ત્યાં બિરાજમાન રહ્યા.**
કાકાશ્રીના સંકલ્પે ગુરુજી દ્વારા જે સમાજ ત્યાં તૈયાર થયો
તે ખરેખર જ આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિવાળો... માહાત્મ્યવાળો તૈયાર થયો.
તે જ તેમના માહાત્મ્યનું દર્શન છે.
આ અમૃત મહોત્સવે ખરેખર જ આજે ગુરુજીના જીવનના નીચોડરૂપે અમૃત વરસી રહ્યું છે. તેમાં ભીંજાઈને ધન્ય થવાનો અવસર છે. ગુરુજીનું સ્વાસ્થ્ય ખૂબ સરસ રહે ને આપણને સહુને તેમના દ્વારા ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુણાતીતાનંદસ્વામી, કાકાશ્રી ને સહુ સ્વરૂપોનું અખંડ સાન્નિધ્ય મળતું રહે તે જ પ્રાર્થના ને આશીર્વાદ.
સહુ સુખિયા રહો...

– લિ. આપના જ ભાઈના જય સ્વામિનારાયણ.

[प.पू. हरिभाई साहेब के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

2 अगस्त '09

सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

गुणातीत समाज की जय।

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय।

प.भ. आनंदी दीदी और समस्त भक्त मंडल,

जय स्वामिनारायण!

आप सभी इकट्ठे होकर 2012 में प.पू. गुरुजी का अमृतपर्व मनाने जा रहे हो।
पत्रिका में गुरुजी के माहात्म्य दर्शन का विभाग शुरु करके सुंदर शुरूआत कर रहे हो।
गुरुजी ने जब दीक्षा ग्रहण नहीं करी थी, तब मैं उनके संपर्क में आया था।
मैंने उनको दिलीप के स्वरूप में देखा था।
बाद में वे साधु हुए तब भी देखा
और
आज दिल्ली मंदिर में विराजमान सभी के गुरुजी स्वरूप में भी दर्शन कर रहा हूँ।
जैसे महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को जूनागढ़ भेजा और नवाब को दिया वचन पूरा किया,
वैसे ही –
प.पू. काकाजी के साथ अपरंपार लगाव के कारण उनके वचन से गुरुजी दिल्ली गए।
'आज्ञा के साथ मूर्ति जाती है' – इस न्याय से **काकाजी वहाँ अखंड विराजमान रहे हैं।**
काकाजी के संकल्प से गुरुजी के द्वारा जो समाज वहाँ तैयार हुआ है,
वह सच में आत्मबुद्धि और प्रीतिवाला... माहात्म्यवाला तैयार हुआ।
यही उनके माहात्म्य का दर्शन है।
इस अमृत महोत्सव में वाकई आज गुरुजी के जीवन के निचोड़ रूप अमृत बरस रहा है। उसमें भीग कर धन्य होने का अवसर है। गुरुजी का स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे और हम सभी को उनके द्वारा भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी, काकाजी और सभी स्वरूपों का अखंड सान्निध्य मिलता रहे यही प्रार्थना और आशीर्वाद। सभी सुखी रहो...

– लि. आपके ही भाई के जय स्वामिनारायण!

૨ ઑગષ્ટ '૦૯

सौरभ - ३

ગુણાતીત સમાજની જય.

મુક્તાક્ષર પુરુષોત્તમની જય.

પ.પૂ. મુકુંદજીવનસ્વામીજીનો અમૃત પર્વ એટલે સમગ્ર યોગી પરિવારનો અમૃત પર્વ ૨૦૧૨ના વર્ષમાં આવી રહ્યો છે જે આપણા સૌના માટે સાક્ષાત્ યોગીજી મહારાજનું ઋણ અદા કરવાનો અમૂલ્ય અવસર કહેવાય.

પ.પૂ. યોગીજી મહારાજે દાદર મંદિરે સંતોની સભામાં કહેલ કે–

'એક શાસ્ત્રીજી મહારાજ આવ્યા તો શ્રી અક્ષરપુરૂષોત્તમની ઉપાસનાનો ડંકો વગાડી દીધો. તો મારે ચાલીસ-ચાલીસ માનતસ્વામી (મહંતસ્વામી) જેવા બનાવવા છે. ચાલીસ વારસદાર બનાવવા છે.'

તે યોગીજી મહારાજના સંકલ્પે એવા પ્રગટ વારસદારો પાકી ગયા તેનું આપણે સૌએ દર્શન કર્યું. તેમાંના એક વારસદાર એટલે મુકુંદજીવનસ્વામીજી.

ઈ.સ. ૧૯૭૧ની સાલમાં યોગીજી મહારાજ સ્વધામ પધાર્યા પછી તે જ સાલમાં **પ.પૂ. કાકાશ્રી** સાંકરદા પધાર્યા અને ગેસ્ટરૂમમાં સંતોની સભા કરી બોલ્યા કે,

''યોગીજી મહારાજ હવે સ્થૂળ દેહે નથી, પરંતુ હવે 'ગુણાતીત પરિવાર'માં અનંત સ્વરૂપે વિરાજમાન છે. તો હવે આપણે બધાએ સાથે રહીને ગુણાતીત સુહૃદ્‌ભાવ રાખીને જીવવાનું છે.''

ત્યારે મુકુંદજીવનસ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછયો કે, *'ગુણાતીત સુહૃદભાવ કેમ રહે?'*

તો કાકાશ્રી બોલ્યા કે, *''રાજા, 'ગુણાતીત સુહૃદ્‌ભાવ' તો સ્વરહિત થયા વિના શકય નથી.''*

તો મુકુંદજીવનસ્વામીજીએ ફરી પૂછ્યું કે, *'સ્વરહિત કેમ થવાય?'*

તો કાકાશ્રી બોલ્યા કે, *'યોગીના સંબંધવાળા બધા જ વ્હાલા લાગે તો સમજવું કે ગુણાતીતના સુહૃદ્ બન્યા છીએ.'*

પછી દૃષ્ટાંત આપતા બોલ્યા કે, *'હબશીનું બાળક કાળું ડીબાંગ હોય તો પણ તેના મા-બાપને બ્યુટિફૂલ લાગે. તેમ તમે બધા ગમે તેમ વર્તો તો પણ મને યોગીસ્વરૂપ જ દેખાવ છો. તેથી મને સહજ સુહૃદ્‌ભાવ રહે છે.'*

આ પ્રસંગ એટલા માટે લખું છું કે ખરેખર મુકુંદજીવનસ્વામીજીએ આજથી ૩૮ વર્ષ પૂર્વે પૂછેલા પ્રશ્નનો જવાબ પોતાના સમગ્ર જીવનમાં વણી લઇને કાકાશ્રીનું ઋણ અદા કરી દીધું છે. તેનાં અત્યારે તેમના જીવનમાં તાદૃશ્ય દર્શન થાય છે.

તો આ શુભ પર્વે તેઓશ્રીના ચરણોમાં પ્રાર્થના કે,

અમ સહુનું જીવન પણ સંપ-સુહૃદભાવ ને એકતામય બને અને યોગીજી મહારાજ અને પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપોનું યત્કિંચિત્ ઋણ અદા કરી શકીએ એ જ અંતરની પ્રાર્થના!

જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

– પૂ. સ્નેહલસ્વામી (સાંકરદા)

[हिन्दी अनुवाद]

2 अगस्त '09

गुणातीत समाज की जय।

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय।

प.पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी का अमृत पर्व यानि समग्र योगी परिवार का अमृत पर्व। 2012 के वर्ष में (वह) आ रहा है, जो हम सभी के लिए साक्षात् योगीजी महाराज का ऋण अदा करने का अनमोल मौका कहा जाए।

प.पू. योगीजी महाराज ने दादर मंदिर में संतों की सभा में कहा था–

'एक शास्त्रीजी महाराज आए, तो श्री अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का डंका बजा दिया। तो मुझे चालीस-चालीस मानतस्वामी (महंतस्वामी) जैसे बनाने हैं। चालीस वारिसदार बनाने हैं।'

योगीजी महाराज के संकल्प से ऐसे प्रगट वारिसदार पक्के हैं, उसका हम सभी ने दर्शन किया।

उसमें से एक वारिसदार यानि – 'मुकुंदजीवनस्वामिजी'।

ई.स. 1971 की साल में योगीजी महाराज के स्वधाम पधारने के बाद, उसी वर्ष में **प.पू. काकाजी** सांकरदा पधारे थे; तब गेस्ट रूम में संतों की सभा करते हुए वे बोले–

''योगीजी महाराज अब स्थूल देह से नहीं हैं, परंतु अब वे 'गुणातीत परिवार' में अनंत स्वरूप से विराजमान हैं। सो अब हम सभी को साथ मिलकर 'गुणातीत सुहृद्भाव' रख कर जीना है।''

तब मुकुंदजीवनस्वामी ने प्रश्न पूछा– *'गुणातीत सुहृद्भाव कैसे रहे?'*

तो काकाजी बोले– *''राजा, 'गुणातीत सुहृद्भाव' तो स्वरहित हुए बिना संभव नहीं।''*

तब मुकुंदजीवनस्वामिजी ने पूछा– *'स्वरहित कैसे हुआ जाए?'*

तो काकाजी बोले– *''योगी के संबंध वाले सब के सब प्यारे लगने लगें तो समझना कि 'गुणातीत सुहृद्' बन गए हैं।''*

तत्पश्चात् दृष्टांत देते हुए बोले–

'हबशी का बालक काला-कलूटा होता है, तो भी उसके माँ-बाप को ब्यूटीफुल लगता है। वैसे ही तुम सभी भले कैसे ही वर्तते हो, तो भी मुझे योगीस्वरूप ही दिखाई देते हो। सो, मुझे सहज सुहृद्भाव रहता है।'

यह प्रसंग इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि आज से 38 साल पहले पूछे हुए प्रश्न के उत्तर को मुकुंदजीवनस्वामिजी ने सच में अपने समग्र जीवन में गूंथ कर काकाजी का ऋण अदा किया है। उनके जीवन में उसका आज तादृश दर्शन हो रहा है।

तो, इस शुभ पर्व पर उनके चरणों में प्रार्थना कि

हम सभी का जीवन भी संप-सुहृद्भाव और एकतामय बने और योगीजी महाराज एवं प्रत्यक्ष स्वरूपों का यत्किंचित् ऋण अदा कर सकें यही अंतर की प्रार्थना!

जय श्री स्वामिनारायण!

– पू. स्नेहलस्वामी (सांकरदा)

सौरभ - ४

ગુરૂજીની (નિમ્ન) ટપાલ મારા ઉપર વર્ષો પ્હેલાં આવેલ. તે મને ખૂબ ગમી હતી. તે સાચવી રાખી હતી અને ઘણી વખત હું વાંચતો હતો અને મને એ ખૂબ જ કામ આવ્યું છે. એ પ્રમાણે જીવન જીવવા પ્રયત્ન પણ કર્યો છે અને તેમાં મને આધ્યાત્મિક ઘણો જ ફાયદો થયો છે. પૂ. સ્વામિજી પાસે એ જ રીતે જીવવા પ્રયત્ન કર્યો, તો પૂ. સ્વામિજી અને વડીલ સંતોએ ખૂબ જ મારૂં જતન કર્યું છે અને ગુરૂજી પણ મને પોતાનો માનતા એથી વિશેષ આનંદ હૈયે હોય જ.

– સાધુ જ્ઞાનસ્વરૂપદાસ (હરિધામ)

૫.૯.'૮૬

...તમારે અત્રે પ.પૂ. કાકાજીના અસ્થિવિસર્જન અવસરે આવવું હતું,
પણ પ.પૂ. સ્વામીશ્રીએ તમોને જવા દેવાની ચોખ્ખી-ઘસાડીને ના જ પાડી દીધી... જાણીને ખૂબ જ આનંદ થયો.

કેવો વિશ્વાસ હશે, ભરોસો હશે પ.પૂ. સ્વામિજીને તારો?
મોટાપુરૂષ સાથે આવો સંબંધ તો હોવો જ જોઈએ કે જેણે કરીને મોટાપુરૂષ આપણું મનધાર્યું તોડી પોતાની રીતે વર્તાવતા સ્હેજે ય અચકાય નહીં!

*પણ, એથી ય વિશેષ–**મન તો ઘોડા કર્યા કરે;** આમ કરવું છે-તેમ કરવું છે, આમ જવું છે-તેમ જવું છે. પણ એ મનના ચક્કરમાં આવવું જ નહીં. મનના દોર્યા દોરઈ જવું જ નહીં. મનમાં પોતાનો કોઈ વિચાર ઊઠે જ નહીં એ વાત તો તદ્દન જૂદી અને ઊંચી... પણ, મન ભલે ઘાટ ઘડયા કરે–આપણે મનના એવા ચક્કરમાં આવી, એ રીતે વર્તવા-એ માટે મોટાપુરૂષ પાસે મંજૂરી મેળવવા આગ્રહ ન રાખીએ–કે વર્તીએ નહીં એટલું તો રાખવું જ. આપણી એવી જરૂર હશે, મોટા પુરૂષને આપણી પાસે સેવા કરાવવી હશે, તો પ.પૂ. સ્વામિજી સામેથી જ કહે અગર એવા કોક મોટેરામાંથી જ બોલશે કે સ્વામી, જ્ઞાનમ્‌ને મોકલો. એ થવા દેવું. **મનથી છૂટા પડી જવું**–એ માટે **ભજન કરવું કે હે મહારાજ! મનના આ વંટોળથી મારી રક્ષા કરજો,** પણ જાતે ઉપાસણ તો કરવું જ નહીં.*

તને યાદ હોય તો, પ.પૂ. સ્વામિજીએ એક વાર વાત કરેલી કે ''આપણે માટે 'વિષય' શું? મનધાર્યું કરીએ એ 'વિષય'! બીજા 'વિષયો' ભોગવવા આપણે જવાનાં ય કયાં છીએ? પણ, સેવા-ભક્તિ ય આપણા મનના ચાળે કર્યા કરીએ એ 'વિષય' જ છે.''

પ્રગટની પરાવાણી ભાગ-૧ના ૭૫મા પાને (પ.પૂ. સ્વામિજીનો આ જૂનો નંબર હતો-તેથી મને યાદ છે) આ વાત બીજી રીતે પ.પૂ. બાપાએ પણ સ્પષ્ટ કરી છે. [ગુરૂ કહે, કેમ જનક ઊઠયો?... મનમાં ઘોડો આવી જાય પણ દેહે તેં સંકલ્પ કેમ ઊપાડયો?]

તું વાંચજે અને પૂ. કોઠારીસ્વામી પાસે સમજજે.

જ્ઞાનસ્વરૂપ, તારા પ્રત્યે એક મમતા છે એટલે સહજ આ લખ્યું છે. ...દોસ્તી દાવે લખ્યું છે તો રાજી રહેજે.

*...**હરિદ્વારમાં** અસ્થિવિસર્જન વખતે તને–બધાંને જ સંભાર્યા હતાં... સહજ જ સાંભરો... અને એક **ખાસ પ્રાર્થના મૂકી કે હે કાકા! આ સાથે અમારી હઠ, માન, ઈર્ષાના સ્વભાવ પણ હવે આ પ્રવાહમાં વહી જાય એવી કરૂણા કરજો અને અમને જોઈને સહુ આપને સંભારે કે આ બધા આવા–તો પૂ. કાકાશ્રી કેવા હશે?–એવું અમારૂં ઘડતર વ્હેલી તકે પૂરૂં થાય એટલું કરી આપશો...'***

– સાધુ મુકુંદજીવનદાસ...

[हिन्दी अनुवाद]

गुरुजी का (निम्न) पत्र वर्षों पहले मेरे पर आया था । वह मुझे खूब जँचा था, सो संभाल कर रखा था। कई बार मैं उसे पढ़ता और वह मेरे बहुत ही काम आया है। इसके मुताबिक जीवन जीने का मैंने प्रयत्न भी किया है और इससे मुझे खूब आध्यात्मिक फायदा भी हुआ है। पू. स्वामिजी के पास इस रीति से जीने का प्रयत्न किया, तो पू. स्वामिजी और बड़े संतों ने मेरी खूब परवरिश करी है और गुरुजी भी मुझे अपना मानते हैं। सो दिल में विशेष आनंद होगा ही।

– साधु ज्ञानस्वरूपदास (हरिधाम)

५.९.'८६

...तुम्हें अभी प.पू. काकाजी के अस्थिविसर्जन के अवसर पर आना था,

लेकिन प.पू. स्वामिजी ने तुम्हें बिल्कुल साफ़-साफ़ मना कर दिया... जान कर खूब ही आनंद हुआ।

कितना विश्वास होगा – कैसा भरोसा होगा प.पू. स्वामिजी को तेरा ?

बड़े पुरुष के साथ ऐसा संबंध तो होना ही चाहिए, ताकि बड़े पुरुष हमारी मनमानी तोड़ कर हमें अपने ढंग से वर्तने में तनिक भी हिचकें नहीं!

*इससे भी विशेष – **मन तो तुक्के करता ही रहेगा;** ऐसा करना है - वैसा करना है, इधर जाना है - उधर जाना है। लेकिन मन के उस बहकावे में आना ही नहीं। मन में अपना कोई विचार उठे ही नहीं, यह बात तो बिल्कुल अलग और ऊँची.... लेकिन, मन भले संकल्प किया करे – हमें मन के ऐसे चक्कर में आकर उस प्रकार से वर्तने, बड़े पुरुष से मंजूरी प्राप्त करने का आग्रह नहीं रखना या वर्तना नहीं, इतना तो जरुर करना ही। यदि हमारे लिए जरुरी होगा और बड़े पुरुष को हमारे द्वारा सेवा करवानी होगी तो प.पू. स्वामिजी सामने से ही कहेंगे या ऐसे किसी बड़े में से बोलेंगे कि स्वामी, ज्ञानम् को भेजो। यह होने देना। **मन से अलग हो जाना** – उसके लिए **भजन करना कि हे महाराज ! मन के इस बवंडर से मुझे बचाना,** लेकिन अपने आप कुछ प्रोग्राम तो बनाना ही नहीं।*

तुझे याद हो तो, प.पू. स्वामिजी ने एक बार बात करी थी कि ''हमारे लिए 'विषय' क्या ? मनमाना करें वह 'विषय' ! अन्य 'विषय' भोगने तो हम कहाँ जाने वाले हैं ? लेकिन सेवा-भक्ति भी हम अपने मन के मुताबिक किया करें यही 'विषय' है।''

प्रगट की परावाणी भाग-१ के ७५वें पृष्ठ पर (प.पू. स्वामिजी का यह पुराना नंबर था – सो मुझे याद है) यह बात अलग प्रकार से प.पू. बापा ने भी स्पष्ट की है। [गुरु कहे, जनक क्यों उठे ?... मन में घोड़ा चल पड़े (मन में तो विचार आ जाए), लेकिन देह से तूने संकल्प को क्यों उठाया ?]

तू पढ़ना और पू. कोठारीस्वामिजी से समझना।

ज्ञानस्वरूप, तेरे प्रति एक ममता है, इसलिए सहज यह लिखा है... दोस्ती के दावे से लिखा है, तो राजी रहना।

*...**हरिद्वार में** अस्थिविसर्जन के समय तुझे-सभी को याद किया था... सहज ही तुम सब याद आओ ही... और एक **खास प्रार्थना करी थी – हे काकाजी ! इसी के साथ हमारे हठ, मान, ईर्ष्या के स्वभाव भी अब इस प्रवाह में बह जाएं, ऐसी करुणा करना, और हमें देख कर सभी आपको याद करें कि ये सब जब ऐसे हैं – तो पू. काकाजी कैसे होंगे ? ऐसी हमारी गढ़ाई जल्दी पूरी हो, इतना कर देना...***

– साधु मुकुंदजीवनदास...

૧૦.૮.'૦૯

सौरभ - ५

ગુણાતીત સત્પુરુષો જ્યારે પૃથ્વી પર પધારે ત્યારે એમની સાથે એવા મુક્તો પણ આવે, જેમના દ્વારા એમની આપણને યથાર્થ ઓળખાણ થાય, એમને નીરખવાની વિશિષ્ટ દ્દષ્ટિ મળે અને એમને રાજી કરી જીવન ધન્ય કરવાની અનુપમ તક સાંપડે. **બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજની એવી યથાર્થ ઓળખાણ સહુ પ્રથમ કાકાશ્રી દ્વારા સમગ્ર સત્સંગ સમાજને થઈ** અને જેમણે જેમણે કાકાશ્રીની આંખે જોગીને જોયા, ઓળખ્યા ને સેવ્યા તેમના પર યોગીજી મહારાજની વિશિષ્ટ દ્દષ્ટિ પડી અને તેઓ યોગીજી મહારાજને સાચા અર્થમાં રાજી કરી શક્યા. એવા એક વિરલ સંત એટલે આપણા સહુના લાડીલા **પ.પૂ. ગુરુજી.** વળી, પ.પૂ. ગુરુજી દ્વારા જેમને કાકાશ્રીની ઓળખાણ થઈ, તેમની જેમ નિખાલસ અને નિષ્કપટભાવથી જેમણે-જેમણે કાકાશ્રીનાં દર્શન, સમાગમ, સેવાનો લાભ લીધો, એ સહુનાં જીવન સાચા અર્થમાં – તન, મન, ધન અને આત્માથી સર્વાંગી સુખી બન્યાં.

એવી વિરલ વિભૂતિ ગુરુજીનો અમારા કુટુંબ સાથે એમના પૂર્વાશ્રમના સમયથી ઘનિષ્ઠ સંબંધ છે. મારા પિતાશ્રી પ.ભ. રસિકભાઈ અને કાકા પૂ. ગોરધનકાકા સાથે ગુરુજીને ખૂબ પ્રીતિ હતી. તેથી અમારી સાથે પણ હંમેશા નાના ભાઈ જેવો જ આત્મીયતાસભર સંબંધ (એમનો) રહ્યો છે. તેમનું પૂર્વાશ્રમનું સમગ્ર કુટુંબ અમને અંગત જ મનાતું. વળી, અમારા ઘરથી તેમનું ઘર નજીક હોવાથી અમે અવારનવાર ત્યાં જતાં. કોઈ કોઈ વાર તો એમનું ઘરકામ કરનાર માણસ 'બાબુ' અમને બંને ભાઈઓ (હું અને ડૉ.મહેન્દ્ર) ને લેવા કે મૂકવા આવે.

ગુરુજીએ દીક્ષા લીધા પછી પણ તેઓ જ્યારે ય તારદેવ આવે ત્યારે એમના કાકાશ્રી સાથેના વિશિષ્ટ સંબંધના અમને સહુને સુંદર દર્શન થતાં. અવારનવાર શિબિર-સમૈયામાં તેઓના 'પ્રાસંગિક ઉદ્‌બોધન' માટે સહુ આતુરતાથી રાહ જોતાં; કારણ **એમની બુદ્ધિગમ્ય તર્કસંગત વાતોથી ઘણા હરિભક્તોને પોતાના પ્રશ્નોનાં સમાધાન મળતાં યા કોઈ મૂંઝવણ કે ગૂંચનો ઊકેલ મળતો.** પણ સૌથી વિશેષ તો **એમની વાતોથી ગુણાતીત સત્પુરુષ સાથે નિષ્કપટભાવે, નિખાલસ સંબંધ કેવી રીતે કરવો તેની અદ્‌ભુત સૂઝ અને પ્રેરણા મળતાં.**

✶ શરૂઆતથી જ પ્રકાશનની સેવામાં ગુરુજીનું યોગદાન વિશિષ્ટ હોવાથી પત્રિકા, પુસ્તકો વિ.માં કાકાશ્રી હંમેશા તેમની સેવા અને માર્ગદર્શન લેવા સૂચન કરતા. ઈ.સ. ૧૯૭૩માં કાકાશ્રીની 'વિદેશ કલ્યાણ યાત્રા' પૂર્વે તેમણે એક નાની અંગ્રેજી ચોપડી ***'લૉર્ડ સ્વામિનારાયણ ઍન્ડ ઍપ્લાઈડ બ્રહ્મજ્ઞાન'*** છપાવવાનું સૂચન કર્યું. સહજ જ તે સેવા માટે ગુરુજી મુંબઈ પધારવાના હોવાથી શરૂઆતનું લેખન કાર્ય કાકાશ્રીએ પૂ. રાજુભાઈ ભટ્ટ પાસે તૈયાર કરાવ્યું. મારે તો ફક્ત તેમના મદદનીશ તરીકે સેવા કરવાની હતી. ગુરુજી જ્યારે મુંબઈ પધાર્યા અને પુસ્તકનું લખાણ જોયું તેથી તેમણે તેમાં થોડા સુધારા સૂચવ્યા જે કાકાશ્રીએ માન્ય કર્યા, તેથી લખાણની ફાઈનલ કૉપીમાં પણ સુધારા થયા. જો કે કાકાશ્રી ઘણી વાર એવી લીલા કરે કે જે લખાણ ટાઈપ થઈ ગયું હોય, ગુરુજીએ માન્ય કરી લીધું હોય, તે પછી પણ તેમાં સુધારા કરાવે તેથી ફાઈનલ કૉપી ફરી ફરી ટાઈપ કરવી પડે. પ્રિન્ટીંગનું કામ મુંબઈમાં મહાલક્ષ્મી પાસે 'એસ્કવાયર

પ્રેસ'માં ચાલતું હતું. કાકાશ્રીનો પરદેશ જવાનો દિવસ નજીક આવતો હતો અને વચ્ચે બહુ જ થોડા દિવસ બચ્યા હોવાથી પ્રેસના માલિકો - **શ્રી તગારે** અને **શ્રી શેમ્બેકર** ફાઈનલ કૉપી માટે ઉતાવળ કરતા હતા.કોઈ કોઈ વાર તો એવું પણ બનતું કે ફાઈનલ કૉપી મશીન પર હોય, બધું ટાઈપ સૅટિંગ થઈ ગયા પછી કાકાશ્રી કોઈ નવો મુદ્દો ઉમેરાવે કે જૂના લખાણમાં સુધારા સૂચવે. પ્રેસમાં લખાણ પહોંચાડવાની સેવા ઘણી વાર મારે કરવાની આવે. હું પ્રેસમાં સુધારા-વધારા કરેલ લખાણ આપું, એટલે તેમના માલિક ગુસ્સે થાય કે *આવી કૉપી ચાલે નહીં;* પણ જો ફરીથી નવી કૉપી કાઢીએ, તો બધું જ નવેસરથી ટાઈપ કરવું પડે. તેમાં એક-બે દિવસ લંબાઈ જાય. તેથી કચવાતે મને બધું લખાણ લઈ તો લે, પણ પછી ચેતવણી આપે કે ફરીથી આવી રીતે ન લાવતા.

હું તારદેવ આવી આ વાત ગુરુજીને કરું તો તેઓ સ્મિત કરતા. કાકાશ્રીને કંઈ પણ કહેવાની તો મારી હિંમત જ ચાલે નહીં, કારણ મારી ઉંમર ખૂબ નાની, વળી મારાથી મોટા વડીલો પૂ.રાજુભાઈ ભટ્ટ અને પ.પૂ. ગુરુજી બધું સંભાળતા હોય, એટલે મારે બીજી કોઈ ચિંતા કરવાનું કારણ ન હતું. દિવસો ઓછા હોવાથી કામ બરાબર થશે કે નહીં તેની ચિંતા મને થયા કરતી.

આ રીતે થોડા દિવસ વીત્યા. બુકનું છેલ્લું ચૅપ્ટર પ્રેસમાં ગયા પછી તેના માલિકે મને કહ્યું–

'હવે કોઈ સુધારા-વધારાને અવકાશ નથી. હવે જો તમે કોઈ લખાણ નવું લાવશો કે ફેરફાર કરાવશો તો આ બુક છપાશે નહી.'

મેં તારદેવ આવીને આ વાત રાજુભાઈ અને ગુરુજીને પણ કરી.

પરંતુ કાકાશ્રી અમારી ધીરજ અને નિર્દોષબુદ્ધિની કસોટી જ કરી રહ્યા હતા. બીજે દિવસે ફાઈનલ કૉપીમાં થોડા સુધારાઓ પોતે જ કર્યા અને મને તત્કાળ પ્રેસ પર મોકલ્યો. હું ગભરાતો-ગભરાતો પ્રેસ પર ગયો, કારણ ત્યાં શું થશે એની કલ્પનાથી જ હું ભયભીત થઈ ગયો હતો અને... મેં જે ધાર્યું હતું તેમ જ થયું. મને જોતા જ શ્રી શેમ્બેકરે મને પૂછ્યું– *'કેમ ફરી વાર આવ્યા ? તમને બુક તો ૪ દિવસ પછી આપવાનું કહ્યું છે.'*

મેં તેમને કાકાશ્રીએ સૂચવેલ સુધારાની કૉપી બતાવી કહ્યું–

'અમારા ગુરુજીએ (કાકાશ્રીએ) કહ્યું છે કે આ હવે એકદમ ફાઈનલ છે. હવે કોઈ ફેરફાર નહી થાય.'

મારી વાત સાંભળી તેમનો પિત્તો આસમાને ગયો. મને કહ્યું–

'આ બધું જ લખાણ - પ્રુફ પાછું લઈ જાવ. આવી રીતે કહી-કહીને તમે ૧૫ દિવસ બગાડયા. આ રીતે કામ ન થાય. મારે તમારી બુક છાપવી જ નથી. હમણાં ને હમણાં જ બધું જ લઈને તમે જતા રહો.'

મેં તેમને સમજાવવાની બહુ કોશિષ કરી, પણ બધું વ્યર્થ. તેઓએ જરા પણ મચક ન આપી. મશીન પરથી બધું પ્રુફ મંગાવીને એક થેલીમાં ભરી, (એ) થેલી મને પકડાવી ત્યાંથી તત્કાળ ચાલી જવા કહ્યું. મારે તો શું કરવું તે સમજ જ ન પડી. પછી મેં તેમને કહ્યું– *'મને ફક્ત એક ફોન કરવા દો.'*

તેમણે કહ્યું – *'તમે બહાર જઈ જે કરવું હોય એ કરો, પણ અહીંથી તો જતા જ રહો ને પાછા આવતા નહી કે કોઈને સાથે લાવતા પણ નહીં. મારો નિર્ણય બદલાશે નહીં.'*

મેં બહાર આવી પબ્લિક ફોનમાંથી તારદેવ ફોન કરી ગુરુજીને બધી હકીકત જણાવી. તેમણે મને કહ્યું – *'તું ત્યાં જ રહે. હું હમણાં જ આવું છું.'*

થોડી જ વારમાં તેઓ ત્યાં આવ્યા. તેમના ચેહરા પર કોઈ ઉશ્કેરાટ, ચિંતા હતા જ નહીં. હું ગભરાતો-ગભરાતો તેમની પાછળ-પાછળ ચાલતો હતો. તેઓ શ્રી શેમ્બેકરને કઈ રીતે સમજાવે છે કે શું વાત કરે છે, તે જોવા હું ખૂબ ઉત્સુક હતો.

મારી ધારણા મુજબ જ ગુરુજીને જોતાં જ શ્રી શેમ્બેકરે થોડી બૂમાબૂમ કરી – *આ રીતે દરરોજ કામમાં ફેરફારો થાય ?*

દરરોજ ફાઈનલ કૉપી બદલાયા કરે વિ. પોતાની તકલીફ તેમજ બીજાં કામોમાં થતા વિલંબ વિ.ની વાત કરી. તે જમાનામાં કમ્પ્યૂટર કે ઑફસૅટ પ્રિન્ટીંગ અસ્તિત્વમાં ન હોવાથી પ્રિન્ટીંગમાં સારો એવો સમય જતો હતો. ગુરુજીએ ખૂબ શાંતિથી એમની વાત સાંભળી. એમની તકલીફો પ્રત્યે પૂરેપૂરી સહાનૂભૂતિ પણ બતાવી ને પછી એક જ વાક્ય બોલ્યા – ***'શું આપણો સંબંધ એક પુસ્તક પૂરતો જ સિમિત રહેશે ?'***

ગુરુજી જે રીતે એ બોલ્યા તે સાંભળી શ્રી શેમ્બેકર એકદમ ઢીલા પડી ગયા. પછી તો ગુરુજીએ એમને કાકાશ્રીના મહિમાની-એમના કાર્યની થોડી વાત કરી પુસ્તક છાપવા મનાવી લીધા. મારી દૃષ્ટિએ જે વસ્તુ તદ્દન અશક્ય જ હતી, તેને ૧૦ જ મિનિટની અંદર ગુરુજીએ શક્ય બનાવી વાતાવરણ એકદમ હળવું કરી દીધું.

લૌકિક રીતે જોઈએ તો પ્રેસવાળાનો કોઈ વાંક ન હતો. બધો જ વિલંબ અમારી તરફથી હોવા છતાં **કાકાશ્રી પ્રત્યેના ગુરુજીના દિવ્યભાવ કે નિર્દોષબુદ્ધિમાં જરાય ફરક ન પડ્યો.** આમ અંતરથી અને બહારથી બંને રીતે આ સમગ્ર પ્રકરણમાં તેમનું મને અદ્‌ભુત દર્શન થયું. **તેમના પ્રત્યે કાકાશ્રીનો 'પક્ષપાતી રાજીપો' શા માટે હતો, તેનો મને થોડો ખ્યાલ આવ્યો !**

✶ ઈ.સ. ૧૯૭૮ની ૧૨ જૂને **કાકાશ્રીના 'હીરક મહોત્સવનું'** મુંબઈમાં આયોજન થયું હતું. તે નિમિત્તે પ.પૂ. સ્વામિશ્રીએ કાકાશ્રીના જીવન પર આધારિત પુસ્તક **'સહૃદયી'** પ્રકાશિત કરવાનું નક્કી કર્યું. પૂ. દાસસ્વામીની સાથે પ.પૂ. ગુરુજીને પણ તેની સેવા સોંપી. એ વખતે નક્કી એવું થયું કે મુદ્દાસર લખાવવા-કરવાનું પ.પૂ.સ્વામિજી કરાવે ને પછી તબક્કા વાર દાસસ્વામી ને છેલ્લે ગુરુજી એને મઠારી લે. તે વખતે ગુરુજીની દિલ્હીમાં હાજરી હોવી ખૂબ જરૂરી હોવાથી તેમણે પુસ્તકની સેવામાં મદદરૂપ થવા મને દિલ્હી બોલાવ્યો. હું ૧૫ દિવસની રજા લઈ દિલ્હી ગયો. આખા દિવસ દરમ્યાન જે લખાવવાનું હોય તે ગુરુજી વિચારી રાખે અને સમય મળે એમ મારી પાસે લખાવડાવે. તે વખતે ટેલિફોનની હાલ છે, એવી સગવડ ન હતી. ટ્રંક કૉલ માટે પણ બુક કરાવવો પડતો. ઘણી વખત મુંબઈ-દિલ્હી લાઈન બગડેલી રહેતી. તેથી ગુરુજીએ

મુંબઈ કાકાશ્રીને કે સોખડા સ્વામીશ્રીને (તે વખતે હરિધામ મંદિર ન હતું) કંઈ પૂછવું હોય, તો એક કાગળ પર બધા મુદ્દા લખી લે ને જેવી ફોનની લાઈન મળે કે બધું વ્યવસ્થિત પૂછી લે. મારા દિલ્હી ગયા પછી લગભગ ૧૦ દિવસ સુધીમાં સારું એવું લખાણ તૈયાર થઈ ગયું.

એ પછી એક દિવસ સવારના અચાનક જ ગુરુજી મને કહે કે *આપણે મુંબઈ જઈયે! કાકાજી યાદ કરતા હોય એવું લાગે છે.*

સંજોગવશાત્ તે દિવસે ફોનની લાઈન બગડેલી હોવાથી કાકાશ્રીનો સંપર્ક થઈ ન શક્યો. બપોરે આરામમાંથી ઉઠીને પાછું કહ્યું– *'મને અંદરથી એવો આવાજ આવે છે કે તું જલ્દી મુંબઈ જા.'*

હું તો એમની વાત સાંભળી જ રહ્યો. કારણ, મને 'પ્રેરણા' કે 'સ્ફૂરણા' કે 'અંતરનો આવાજ' વિગેરેનું કશું જ જ્ઞાન કે અનુભવ હતાં નહી. ગુરુજી જેવો કાકાશ્રી સાથેનો સંબંધ પણ ન હતો કે ન્હોતી કોઈ ખાસ 'સમજણ'. બીજા દિવસે પણ તેમણે લખાવવાની સેવા કરાવી, પણ દિવસમાં ૩-૪ વખત એમ કહ્યું કે *કાકાશ્રી મને યાદ કરી રહ્યા લાગે છે!*

ત્રીજે દિવસે સવારે કાકાશ્રીનો મુંબઈથી ફોન આવ્યો કે તેમને ***'રિયલ ઇસેન્સ ઑફ તાન્ત્ર'*** નામનું અંગ્રેજી પુસ્તક લખવું છે, તો તેના અનુસંધાનમાં તેઓ (ગુરુજી) તાત્કાલિક મુંબઈ આવે. વળી કાકાશ્રીએ એમને એમ પણ કહ્યું– *હું બે દિવસથી દિલ્હી ફોન કરવા પ્રયત્ન કરતો હતો, પણ લાઈન બગડેલી હોવાથી સંપર્ક ન થઈ શક્યો.*

હું તો આ સાંભળી તાજ્જુબ થઈ ગયો કે **ગુરુજીનું કાકાશ્રી સાથે આ કેવું અદ્‌ભુત આંતરિક અનુસંધાન! ગુરુજીના જીવનની પ્રત્યેક પળ કેટલી બધી 'કાકામય' છે,** તેનું મને આ પ્રસંગથી ખૂબ અદ્‌ભુત દર્શન થયું.

✶ ઈ.સ.૨૦૦૨માં કાકાશ્રીની સાક્ષાત્કાર સુવર્ણજયંતિના સમૈયા વખતે હું સંજોગવશાત્ દિલ્હી હાજર રહી શક્યો ન હતો. તે વખતે મંદિરના ઉપરના હૉલમાં ગુરુજીએ કાકાજીની લાક્ષણિક મૂર્તિઓનું બહુ જ પ્રેરણાદાયી પ્રદર્શન ગોઠવ્યું હતું. તે તસ્વીરોની નીચે કાકાશ્રી માટે મેં બનાવેલ ભજન – ***'જેણે જોયા એને મૂર્તિ મનમાં વસી'*** ની પંક્તિઓ મૂકી હતી. આ પ્રદર્શન ગોઠવ્યા પછી થોડા દિવસ પછી ગુરુજીનો મને ફોન આવ્યો–

'તું ભલે સમૈયામાં હાજર ન રહી શક્યો, પણ આ પ્રદર્શન જોવા ખાસ દિલ્હી આવ અને તું આવીશ જ એવા વિશ્વાસે મેં પ્રદર્શન (વધુ) બે-ત્રણ દિવસ ખુલ્લું રખાવ્યું છે. તારી પ્લેનની ટિકિટની સગવડ પણ હું કરીશ. માટે ૧-૨ દિવસમાં જ આવી જા. તારા આવ્યા પછી જ પ્રદર્શન આટોપાશે.'

જે રીતે અને જે ભાવથી ગુરુજીએ વાત કરી, તેથી મારી આંખોમાં ઝળઝળિયાં આવી ગયાં કે એક નાના સેવક માટે પણ આટલો બધો ભાવ! મેં તરત જ ઑફિસમાંથી 'કેઝ્યુઅલ લીવ' લીધી ને દિલ્હી જઈ પ્રદર્શન નિહાળ્યું ને તેથી વધુ તો ગુરુજીને નિહાળ્યા. મારા આગમનથી તેમણે ખૂબ રાજીપો બતાવ્યો ને મારા ૨-૩ દિવસના રોકાણ દરમ્યાન હું કોઈ મોટો વી.આઈ.પી. હોઉં, એવી રીતે મારી સરભરા કરાવી.**જો કે વી.આઈ.પી. કરતાં પણ એક સ્વજન તરીકેનો**

તેમનો મારા પ્રત્યેનો પ્રેમ અને હૂંફ તો સતત વધતાં જ રહ્યાં છે, તેનો પણ મને અહેસાસ થયો.

✶ ઈ.સ. ૧૯૯૭માં જ્યારે ગુરુજીએ 'બ્રહ્મપ્રવાહ' પુસ્તક છાપવાનું નક્કી કર્યું, ત્યારે તેની સેવા માટે મને દિલ્હી આવવા સૂચન કર્યું. તે દિવસોમાં હું ઑફિસના કામમાં ખૂબ વ્યસ્ત હોવાથી વધુ દિવસો ફાળવી શકું એમ ન હતો. મારી સાથે પૂ.રાજુભાઈ ભટ્ટ અને પ.ભ. ઉલ્લાસ વડાલકરને પણ આ જ પુસ્તકની સેવા માટે ગુરુજીએ બોલાવ્યા હતા. મારી પાસે દિવસો ઓછા હતા, તેથી તેમણે અમારી ત્રણેની મુંબઈ-દિલ્હીની આવવા-જવાની વિમાનની ટિકિટની સગવડતા કરી! વળી, દિલ્હીમાં પણ અમારા સમયનો પૂરેપૂરો ઉપયોગ થાય, એ માટે પોતાના બધાં જ કાર્યક્રમ રદ્દ કર્યા અને ૩-૪ દિવસ અમારી સાથે જ રહ્યા. પુસ્તકના મુખપૃષ્ઠથી લઈ છેલ્લા પાના સુધીની સમગ્ર ગોઠવણી અને લખાણનું આયોજન કર્યું અને દિલ્હીથી નીકળ્યા ત્યારે દરવખતની જેમ મને *'થૅંક યૂ ફૉર એવરીથિંગ'* કહ્યું! જો કે એમના એ 'TYFET' માં મને ક્યારે ય ઔપચારિકતા લાગી નથી. **એ એમના પ્રેમ અને વાત્સલ્યની અભિવ્યક્તિની એક લાક્ષણિક રીત છે!**

કેટલાય પ્રસંગોમાં કે સેવા કે આયોજનોમાં એમની સાથે મેં ઘણી વખત મારા ગજાની ઉપરવટ જઈ, મારી હેસિયતની સીમા ઉલ્લંઘીને કે વિવેકની મર્યાદા ચૂકી જઈને પણ વાત કરી હશે કે દલીલો કરી હશે, પણ **તેમણે** તો **હંમેશા મારા પ્રત્યે 'વ્હાલા નાના ભાઈ' જેવું જ વલણ ને વર્તન રાખ્યાં છે.** મારી ગેરસમજૂતી, ડહાપણ, નાદાની કે ચાલાકી ને વિશાળ હૃદયે ક્ષમ્ય ગણી **કેવળ કાકાશ્રીના સંબંધે જ જોયો છે ને સાચવ્યો છે.**

✶ મુંબઈમાં અમે જ્યાં રહેતા હતા તે જન્માષ્ટમી બિલ્ડીંગ, હરકિસનદાસ હૉસ્પીટલની માલિકીનું હતું. ઇ.સ. ૧૯૯૯માં તે હૉસ્પીટલનો વહીવટ એક મોટી કંપની હસ્તક આવ્યો. તેમણે ઇ.સ. ૨૦૦૦માં એ બિલ્ડીંગમાં જેટલા ભાડૂત હતા, તે તમામને અમૂક પૈસા આપી બિલ્ડીંગ ખાલી કરવા તાકીદ કરી. સમય મર્યાદા ઓછી હતી અને મારો વ્યવસાય, નાના પુત્રની સ્કૂલ વિ. કારણોને લીધે હું **પ્રૉપર મુંબઈ**માં જ બીજી જગા શોધી રહ્યો હતો. ગુરુજીને જેવી આ વાતની ખબર પડી કે તરત જ તેમણે મને ફોન કરી કહ્યું–

*હું જાણું છું કે **પ્રૉપર મુંબઈ**માં જગા લેવી કેટલી અઘરી છે. પણ, તેમ છતાં પૈસાની જરૂર માટે તું અચકાઈશ નહીં. તારે જેવી જગ્યા જોઈએ તે લઈ લેજે. ખૂટતા પૈસાની સગવડ હું કરાવી આપીશ.*

જો કે મહારાજની કૃપા ને તેમના સંકલ્પ અને આશીર્વાદે અને તારદેવના ભાઈઓના સહકાર ને પ્રયત્નોથી મને વ્યવસ્થિત જગા મળી ગઈ. મારે ગુરુજી પાસેથી આર્થિક મદદની જરૂર ન પડી, પરંતુ તે વખતે **તેમણે જે હૈયાધારણ આપી તે જ તેમની મારા કુટુંબ પ્રત્યેની આત્મીયતાનું જ્વલંત ઉદાહરણ છે.**

એમના અમૃતપર્વ નિમિત્તે આ સ્મૃતિ દર્શન દ્વારા એમના જેવી ધ્યેયની સ્પષ્ટતા, ધ્યેય પ્રત્યેની વફાદારી, ભજનની તીવ્રતા, સત્પુરુષ તરફની નિર્દોષબુદ્ધિ, સાથી મુક્તો પ્રત્યેનો નિખાલસ ને પારદર્શી નિષ્કપટ સંબંધ અને ભક્તો પ્રત્યેની સ્વરૂપલક્ષી આત્મીયતા દૃઢ થયા કરે એ જ અભ્યર્થના!

– હેમંતભાઈ મર્ચંટ, પવઈ

[हिन्दी अनुवाद]

१०.८.'०९

गुणातीत सत्पुरुष जब पृथ्वी पर पधारते हैं, तब अपने साथ ऐसे मुक्त को भी लाते हैं, जिनके द्वारा हमें उनकी यथार्थ पहचान हो पाए, उन्हें देखने की विशिष्ट दृष्टि मिले और उन्हें राजी करके जीवन को धन्य करने का अनुपम मौका मिले। **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की ऐसी यथार्थ पहचान सबसे पहले काकाजी द्वारा समग्र सत्संग समाज को हुई** और जिस-जिसने काकाजी की आँखों से 'योगी' को देखा, पहचाना और सेवन किया, उस पर योगीजी महाराज की विशिष्ट कृपादृष्टि पड़ गई और वे योगीजी महाराज को सच्चे अर्थ में राजी कर सके। उनमें से एक **विरल संत** यानि–हम सभी के लाड़ले **प.पू. गुरुजी** और... गुरुजी के द्वारा जिन्हें काकाजी की पहचान हुई, उनके जैसे निखालस और निष्कपटभाव से जिन-जिन्होंने काकाजी के दर्शन, समागम, सेवा का लाभ लिया, उन सभी का जीवन सच्चे अर्थ में–तन, मन, धन और आत्मा से सर्वांग सुखी बना।

ऐसी विरल विभूति गुरुजी का हमारे कुटुंब के साथ उनके पूर्वाश्रम के समय से घनिष्ठ संबंध है। मेरे पिताजी प.भ. रसिकभाई और ताऊजी पू. गोरधनकाका के साथ गुरुजी को खूब प्रीति थी। सो, हमारे साथ भी हमेशा छोटे भाई जैसा ही आत्मीयताभरा संबंध (उनका) रहा है। उनके पूर्वाश्रम का समग्र कुटुंब हमें निजी ही लगता था और... हमारे घर से उनका घर नज़दीक होने के कारण हम कई बार वहाँ जाते। कभी-कभार तो उनके यहाँ काम करने वाला नौकर 'बाबु' हम दोनों भाईयों (मैं और डॉ. महेन्द्र) को लेने या छोड़ने आता।

दीक्षा लेने के बाद भी गुरुजी जब भी ताड़देव आते, तब काकाजी के साथ के उनके विशिष्ट संबंध का हम सभी को सुंदर दर्शन होता। शिविर-उत्सव में तो उनके 'प्रासंगिक उद्‌बोधन' के लिए सभी आतुरता से राह देखते; क्योंकि दिमाग़ में फिट बैठ जाए ऐसी **उनकी तर्कसंगत बातों से कई हरिभक्तों को अपने प्रश्नों का हल मिलता या उदासीनता या उलझन का कोई उपाय मिलता।** लेकिन सबसे विशेष तो **उनकी बातों से गुणातीत सत्पुरुष के साथ निष्कपटभाव से निखालस संबंध कैसे करना, उसकी अद्‌भुत सूझ और प्रेरणा मिलती।**

- ✶ शुरूआत से ही प्रकाशन की सेवा में गुरुजी का विशिष्ट योगदान होने के कारण पत्रिका, पुस्तकों इत्यादि में काकाजी हमेशा उनकी सेवा और मार्गदर्शन लेने का सूचन करते। ई.स.1973 में काकाजी ने विदेश की 'कल्याण यात्रा' पर जाने से पहले अंग्रेजी की एक छोटी पुस्तिका ***'लॉर्ड स्वामिनारायण एन्ड एप्लाईड ब्रह्मज्ञान'*** छपवाने का सूचन किया। सहज ही इस सेवा के लिए गुरुजी मुंबई पधारने वाले थे। सो, शुरूआत का लेखन कार्य काकाजी ने पू. राजुभाई भट्ट द्वारा तैयार करवाया। मुझे तो केवल उनको एसीस्ट करने की सेवा करनी थी। गुरुजी जब मुंबई पधारे और पुस्तक का मॅटर देखा, तो उन्होंने उसमें थोड़े बदलाव करवाए, जो काकाजी ने मान्य किए। सो, मॅटर की फाईनल कॉपी में भी बदलाव हुए। वैसे तो काकाजी कई बार ऐसी लीला करते कि जो लेखन टाईप हो चुका हो, गुरुजी ने मान्य कर दिया हो, उसमें भी वे बदलाव करवाते; जिससे फाईनल कॉपी कई बार टाईप करनी पड़ती। प्रीन्टिंग का

काम मुंबई में महालक्ष्मी के पास 'एस्क्वायर प्रेस' में चलता था। काकाजी के विदेश जाने का दिन नज़दीक आ रहा था और बीच में बहुत ही थोड़े दिन बचे होने के कारण प्रेस के मालिक **श्री तगारे** और **श्री शेम्बेकर** फाईनल कॉपी के लिए जल्दबाजी करते थे। कई बार तो ऐसा भी हुआ कि फाईनल कॉपी मशीन पर होती, सारा टाईप सॅटिंग होने के बाद काकाजी कोई नया मुद्दा एड करवाते या पुरानी मॅटर में कुछ सुधारने की सूचना देते। प्रेस में मॅटर पहुँचाने की सेवा मेरे हिस्से थी। मैं सुधार करा हुआ मॅटर लेकर प्रेस में जब देता, तो उसका मालिक गुस्सा होता–*ऐसी कॉपी नहीं चलेगी;* पर दोबारा नई कॉपी निकालें, तो सारा ही नए सिरे से टाईप करना पड़े। उसमें एक-दो दिन लग जाते। सो, कचोटते मन से वह मेरे पास से सारी मॅटर ले तो लेता, लेकिन फिर चेतावनी भी देता कि दोबारा इस तरह नहीं लाना।

मैं ताड़देव आकर यह बात गुरुजी को करता, तो वे मुस्कुरा देते। काकाजी को तो कुछ कहने की मेरी हिम्मत ही न होती, क्योंकि मेरी उम्र खूब छोटी और फिर मेरे से बड़े पू. राजुभाई भट्ट और प.पू. गुरुजी सब संभालते हों, तो मुझे दूसरी कोई चिंता करने की वजह ही नहीं थी। दिन कम होने के कारण काम ठीक से होगा या नहीं, उसकी चिंता मुझे रहा करती थी।

इस तरह थोड़े दिन बीते। पुस्तिका का आख़िरी चॅप्टर प्रेस में जाने के बाद मालिक ने मुझसे कहा–

'अब कोई बदलाव की गुंजाइश नहीं है। अब यदि तुम कोई मॅटर नया लाओगे या कोई बदलाव करवाओगे, तो यह पुस्तक छपेगी नहीं।'

मैंने ताड़देव आकर यह बात राजुभाई और गुरुजी को भी करी।

परंतु काकाजी तो हमारे धैर्य और निर्दोषबुद्धि की कसौटी ही कर रहे थे। दूसरे दिन फाईनल कॉपी में खुद ही थोड़े बदलाव किए और मुझे तुरंत प्रेस भेजा। मैं डरते-डरते प्रेस गया, क्योंकि वहाँ क्या होगा उसकी कल्पना से ही मैं डरा-सा था और... जो मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ। मुझे देखते ही श्री शेम्बेकर ने मुझसे पूछा–*'क्यों फिर आए? तुम्हें किताब तो चार दिन के बाद देने के लिए कहा है।'*

मैंने उसे काकाजी द्वारा किए बदलाव की कॉपी देते हुए कहा–

'हमारे गुरुजी (काकाजी) ने कहा है कि यह अब एकदम फाईनल है। अब इसमें कोई बदलाव नहीं होगा।'

मेरी यह बात सुनते ही उसका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। मुझसे कहा–

'यह सारा मॅटर-प्रुफ वापिस ले जाओ। ऐसा कह-कह कर तुमने 15 दिन बिगाड़े हैं। इस तरह काम नहीं होता। मुझे तुम्हारी किताब छापनी ही नहीं है। अभी के अभी ही सब कुछ लेकर तुम चले जाओ।'

मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन सब कुछ व्यर्थ! उन्होंने मेरी बात को तनिक भी तुल नहीं दिया। मशीन से सारा प्रूफ मंगवा कर एक थैली में भर कर, (वह) थैली मुझे पकड़ा दी और वहाँ से तुंरत चले जाने को कहा। क्या करना है, वह मुझे समझ ही नहीं आ रहा था। फिर मैंने उनसे कहा–*'मुझे बस एक फोन करने दो।'*

उन्होंने मुझसे कहा– *'तुम्हें बाहर जाकर जो करना हो वह करो, लेकिन यहाँ से तो चले ही जाओ और दोबारा यहाँ आना नहीं या किसी को साथ भी नहीं ले आना। मेरा निर्णय बदलेगा नहीं।'*

बाहर आकर पब्लिक फोन से ताड़देव फोन करके मैंने गुरुजी को सारी हक़ीक़त बताई। उन्होंने मुझे कहा–*'तू वहीं रहना, मैं अभी आता हूँ।'*

थोड़ी ही देर में वे वहाँ आए। उनके चेहरे पर कोई उकसाहट-एक्साईटमेन्ट, चिंता थी ही नहीं। मैं डरता-डरता उनके पीछे-पीछे चल रहा था। वे श्री शेम्बेकर को किस प्रकार समझाते हैं या क्या बात करते हैं, यह देखने को मैं खूब उत्सुक था।

मेरी धारणा के मुताबिक गुरुजी को देखते ही श्री शेम्बेकर ने थोड़ी चिल्लाचिली करी–*इस प्रकार काम में हर रोज चईन्जीस होते हैं क्या?*

हर रोज फाईनल कॉपी बदलती रहने से अपनी तकलीफ और अन्यों के कामों में होती देरी वगैरह की सारी बातें करी। उस ज़माने में कम्प्यूटर या ऑफसॅट प्रीन्टिंग अस्तित्व में न होने के कारण प्रीन्टिंग में काफी समय लगता था। **गुरुजी** ने खूब शांति से उनकी बात सुनी। उनकी तकलीफों के प्रति खूब हमदर्दी भी व्यक्त की और फिर **एक ही वाक्य बोले–*'क्या हमारा संबंध एक पुस्तक तक ही सीमित रहेगा?'***

गुरुजी जिस ढंग से बोले थे, वह सुन कर श्री शेम्बेकर एकदम ढीले पड़ गए। फिर तो, गुरुजी ने उन्हें काकाजी की महिमा की-उनके कार्य की थोड़ी बात करके पुस्तक छापने के लिए मना लिया। मेरी दृष्टि से जो बात बिल्कुल नामुमकिन ही थी, उसे दस ही मिनिट के अंदर गुरुजी ने संभव बना कर माहौल एकदम हल्का कर दिया।

लौकिक रीति से देखें तो प्रेस वाले का कोई कसूर नहीं था। सारी देरी हमारी ओर से ही होने के बावजूद, **काकाजी के प्रति गुरुजी के दिव्यभाव या निर्दोषबुद्धि में तनिक भी फर्क नहीं पड़ा।** यूँ अंतर और बाहर से–दोनों तरीके से इस सारे प्रकरण में मुझे उनका अद्भुत दर्शन हुआ। उनके ऊपर **काकाजी की 'पक्षपाती प्रसन्नता' किस वजह से थी, उसका मुझे थोड़ा ख्याल आया!**

✶ ई. स. 1978 की 12 जून को **काकाजी के 'हीरक महोत्सव'** का मुंबई में आयोजन हुआ था और उस उपलक्ष्य में प.पू. स्वामिजी ने काकाजी के जीवन पर आधारित पुस्तक **'सहृदयी'** प्रकाशित करने का तै किया था। पू. दासस्वामी के साथ प.पू. गुरुजी को भी उसकी सेवा सौंपी और... ऐसा निश्चित हुआ कि प.पू. स्वामिजी मुद्दे लिखें-करें, उसके बाद तबके से दासस्वामी और आख़िर में गुरुजी सँवारें। उस समय गुरुजी की हाजिरी दिल्ली में खूब जरुरी होने के कारण उन्होंने पुस्तक की सेवा में सहायरुप होने मुझे दिल्ली बुलाया। मैं 15 दिन की छुट्टी लेकर दिल्ली गया। पूरे दिन में गुरुजी को जो कुछ लिखवाना होता, उसे वे सोच कर रखते और समय मिलते ही मुझ से लिखवाते। टॅलीफोन की अभी जैसी सुविधा है, ऐसी उस समय नहीं थी। ट्रंक कॉल के लिए भी पहले से बुक करवाना पड़ता था। कई बार मुंबई-दिल्ली की फोन लाईन बिगड़ी भी रहती। सो, गुरुजी को यदि काकाजी से मुबंई या स्वामिजी से सोखड़ा (उस समय 'हरिधाम' मंदिर नहीं था) कुछ पूछना होता, तो वे एक काग़ज़ पर सारे मुद्दे लिख कर

रखते, ताकि फोन की लाईन मिलते ही सब बिना भूले-करे पूछ सकें। मेरे दिल्ली जाने के लगभग 10 दिन में तो अच्छा-खासा मॅटर तैयार हो गया।

उसके बाद एक दिन सुबह अचानक ही प.पू. गुरुजी मुझसे बोले कि *हम मुंबई जाएं! काकाजी याद कर रहे हैं, ऐसा लग रहा है।*

संजोगवश, उस दिन फोन की लाईन बिगड़ी होने के कारण काकाजी से संपर्क हो नहीं सका। दोपहर को विश्राम में से उठ कर दोबारा कहा– *'मुझे अंदर ऐसी आवाज आ रही है कि तू जल्दी मुंबई जा।'* मैं तो उनकी बात सुनता ही रहा, क्योंकि मुझे 'प्रेरणा' या 'स्फुरणा' या 'भीतर की आवाज़' वगैरह का कुछ भी ज्ञान या अनुभव था नहीं। गुरुजी जैसा काकाजी के साथ का न तो संबंध था और न था कोई खास 'ज्ञान'।

अगले दिन भी उन्होंने मुझ से लिखवाने की सेवा करवाई; लेकिन दिन में तीन-चार बार ऐसा कहा कि *काकाजी मुझे याद कर रहे हैं, ऐसा लग रहा है।*

तीसरे दिन सुबह काकाजी का मुंबई से फोन आया कि उन्हें ***'रियल इसेन्स ऑफ तान्त्र'*** नाम की अंग्रेजी पुस्तक लिखनी है, तो उसके लिए वे (गुरुजी) तुरंत मुंबई आएं। साथ ही काकाजी ने उन्हें ऐसा भी कहा– *'मैं दो दिन से दिल्ली फोन करने का प्रयत्न कर रहा था, लेकिन लाईन बिगड़ी होने के कारण संपर्क नहीं हो सका।'*

मैं तो यह सुन कर ताज्जुब रह गया कि **गुरुजी का काकाजी के साथ यह कैसा अद्भुत आंतरिक संबंध! गुरुजी के जीवन का प्रत्येक पल कितना अधिक 'काकामय' है,** उसका मुझे इस प्रसंग से खूब अद्भुत दर्शन हुआ।

✶ ई.स. 2002 में काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती के उत्सव के समय मैं संजोगवश दिल्ली हाज़िर नहीं रह सका था। उस समय मंदिर के ऊपर हॉल में गुरुजी ने काकाजी की लाक्षणिक मूर्तियों का बहुत ही प्रेरणादायी प्रदर्शन लगवाया था। उन मूर्तियों के नीचे मैंने बनाया काकाजी का भजन– ***'जेणे जोया एने मूर्ति मनमां वसी'*** की पंक्तियाँ लिख कर रखी थी। इस प्रदर्शनी के लगने के थोड़े दिन बाद गुरुजी का फोन आया–

'तू भले उत्सव में हाज़िर नहीं रह पाया, लेकिन यह प्रदर्शनी देखने तू खास दिल्ली आ जा और तू आएगा ही, इस विश्वास से मैंने प्रदर्शनी (और) दो-तीन दिन खुली रखी है। तेरे लिए प्लेन की टिकिट की व्यवस्था भी मैं कर दूँगा। सो, एक-दो दिन में ही आ जा। तेरे आने के बाद ही प्रदर्शनी को समेटेंगे।'

जिस तरीके से और जिस भाव से गुरुजी ने बात करी, उससे मेरी आँखों में आसूँ आ गए कि एक छोटे सेवक के लिए भी इतना अधिक भाव! मैंने तुरंत ही ऑफिस से 'केज्युअल लीव' ली और दिल्ली जाकर प्रदर्शनी निहारी और उससे अधिक तो गुरुजी को निहारा। मेरे वहाँ जाने पर उन्होंने खूब प्रसन्नता दिखाई और दो-तीन दिन के मेरे वहाँ ठहरने के दौरान मानो मैं कोई बड़ा वी.आई.पी. हूँ, ऐसी मेरी खातिरदारी करवाई। **वैसे तो वी.आई.पी. से भी अधिक एक स्वजन के रूप में उनका मेरे प्रति प्रेम व उष्मा तो निरंतर बढ़ते ही रहे हैं, उसका भी मुझे एहसास हुआ।**

- ई.स.1997 में जब गुरुजी ने 'ब्रह्मप्रवाह' पुस्तक छपवाने का निर्णय किया, तब उसकी सेवा के लिए मुझे दिल्ली आने का सूचन किया। उन दिनों ऑफिस के काम में खूब व्यस्त होने के कारण मैं ज्यादा दिन की छुट्टी नहीं ले सकता था। मेरे साथ पू. राजुभाई भट्ट और प.भ. उल्लास वडालकर को भी इसी पुस्तक की सेवा के लिए गुरुजी ने बुलाया था। मेरे पास दिन कम थे, सो उन्होंने हम तीनों की मुंबई-दिल्ली की आने-जाने की फ्लाईट की टिकिट की व्यवस्था करी! इससे भी अधिक दिल्ली में भी हमारे समय का पूरा उपयोग हो, इसलिए अपने सभी कार्यक्रम रद्द किए और तीन-चार दिन हमारे साथ ही रहे। पुस्तक के मुखपृष्ठ से लेकर आख़िरी पृष्ठ तक की सारी सॅटींग और मॅन्युस्क्रीप्ट का आयोजन किया और (हम) दिल्ली से निकले, तब हर बार की तरह मुझे *'थँक यू फॉर एवरीथिंग'* कहा! हाँ, उनके इस **'TYFET'** में मुझे कभी भी औपचारिकता लगी नहीं है। **अपने प्रेम और वात्सल्य की अभिव्यक्ति करने की उनकी यह एक लाक्षणिक रीति है!**

कितने ही प्रसंगों में या ऐसे आयोजनों में उनके साथ मैंने कई बार अपनी औकात से ऊपर जाकर, अपनी हैसियत की सीमा लांघ करके या विवेक की मर्यादा चूक कर भी बात करी होगी या दलीलें करी होंगी, लेकिन **उन्होंने** तो **हमेशा मेरे प्रति 'प्यारे छोटे भाई' जैसा ही रवैया और वर्तन रखा है।** मेरी गलतफ़हमी, अधिक सयानेपन, नादानी या चालाकी को विशाल हृदय से नज़रअंदाज करते हुए **केवल काकाजी के संबंध से ही देखा है और संभाला है।**

- मुंबई में हम जहाँ रहते थे, वो जन्माष्टमी बिल्डिंग हरकिशनदास हॉस्पिटल का हिस्सा थी। ई.स.1999 में हॉस्पिटल का कारोबार एक बड़ी कंपनी ने संभाला। उन्होंने ई.स. 2000 में उस बिल्डिंग में जितने किरायेदार रहते थे, उन सभी को कुछ पैसा देकर ताकीद से बिल्डिंग खाली करने के लिए कहा। समय मर्यादा कम थी और मैं अपने व्यवसाय एवं छोटे पुत्र के स्कूल इत्यादि के कारण **प्रॉपर मुंबई** में ही दूसरी जगह ढूँढ रहा था। गुरुजी को जैसे ही इस बात का पता चला, तुरंत ही उन्होंने मुझे फोन पर कहा– *मैं जानता हूँ कि **प्रॉपर मुंबई में** जगह लेना कितना मुश्किल है। लेकिन, पैसे की जरुरत के लिए तू हिचकना-करना नहीं। तुझे जैसी जगह चाहिए, वह ले लेना। पैसों की कमीबेशी मैं पूरी करवा दूँगा।* महाराज की कृपा और उनके संकल्प एवं आशीर्वाद और ताड़देव के भाइयों के सहयोग और प्रयत्न से मुझे व्यवस्थित जगह मिल गई। हाँलाकि मुझे गुरुजी से पैसे लेने की जरुरत भी नहीं पड़ी, परंतु उस समय **उन्होंने मुझे जो मॉरल सपोर्ट दी, वही उनकी मेरे परिवार के प्रति की आत्मीयता का ज्वलंत उदाहरण है।**

उनके अमृतपर्व निमित्त यह 'स्मृति दर्शन' द्वारा उनके जैसी ध्येय की स्पष्टता, ध्येय के प्रति वफादारी, भजन की तीव्रता, सत्पुरुष के प्रति निर्दोषबुद्धि, साथी मुक्तों से निखालस, पारदर्शी और निष्कपट संबंध एवं भक्तों के प्रति स्वरुपलक्षी आत्मीयता दृढ़ होती जाए यही अभ्यर्थना!

– हेमंतभाई मर्चंट, पवई

28 मार्च 2009 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या पर

प.भ. समीरभाई दवे (अमदावाद)

...हम सभी के जीवन में गुरुजी के कुछ न कुछ अनुभव हुए होते हैं, जो हम एक-दूसरे के साथ शॅयर करते हैं और जीव को बल मिलता है... सत्संग में आगे बढ़ने का मौका मिलता है। **ब्रह्मस्वरूप संतों का व्यापक स्वरूप होता है, ऐसा ही प.पू. गुरुजी का है। काकाजी जैसे कहते थे– *'त्यां हवा नथी ?'* वैसा इनका स्वरूप है। हम जब भी–जहाँ भी उन्हें याद करते हैं, वे हमें कोई न कोई अनुभव करवा ही देते हैं।**

मैं एक छोटा-सा प्रसंग आपके साथ शॅयर करूँगा। मैं सत्संग में जब नया-नया जुड़ा था, तब मुझे गुरुजी के प्रत्यक्ष दर्शन खूब होते थे। गुरुजी दिल्ली बैठे हों और मुझे अमदावाद में गुरुजी के दर्शन होते रहते... पर बीच में एक लम्बा-सा गॅप पड़ गया, जिसमें गुरुजी के ऐसे दर्शन नहीं होते थे। अब मैंने फिक्स्ड टाइम की 'धुन' शुरु की हुई है। मैं रॅग्युलर रात को एलार्म लगा कर सुबह पाँच बजे फिक्स्ड टाइम पर फॉर्टी मिनिट्स की धुन शुरू कर देता हूँ। गुरुजी कहते हैं कि फिक्स्ड टाइम पर की हुई 'धुन' महाराज को अचूक पहुँचती है। एक दिन थकावट के कारण रात को मोबाइल में एलार्म लगाना भूल गया। अगले दिन सुबह अचानक ही मेरी नींद खुली तो ऐसा लगा कि गुरुजी उठाते हुए कह रहे हैं– *'उठ, धुन नथी करवी ?'* मैं एकदम से चौंक कर सोचने लगा कि स्वप्न है या क्या ? गुरुजी प्रत्यक्ष खड़े हुए हैं और मुझ से बात कर रहे हैं *'तारो धुननो टाईम थई गयो, धुन नथी करवी ?'* इतनी बात होने के बाद दोबारा गुरुजी ने कहा कि *पाटला सासु ने फोन कर।* मैं थोड़ी देर तक कशमकश में रहा। पाँच-दस मिनट सॅटल होने में लगा, क्योंकि इतने सालों के बाद दोबारा गुरुजी ने दर्शन दिए। बहुत ख़ुशी भी हो रही थी, पर हेज़ीटेशन भी थी कि इतनी सुबह शोभना बहन को फोन करके बताऊँ या क्या करूँ? फिर सोचा, ये कोई भ्रम या भ्रान्ति तो है नहीं। फिर मैंने शोभना बहन को फोन करके कहा– *शोभना बहन, अभी गुरुजी आए थे। मैं फिक्स्ड टाईम धुन का एलार्म लगाना भूल गया, तो गुरुजी ने आकर मुझे जगाया और कहते हैं कि धुन नथी करवी और आपको फोन करने कहा।* तो शोभना बहन कहती हैं *'मैं भी पाँच बजे उठकर फिक्स्ड टाईम की धुन करती हूँ, लेकिन आज मेरा भी एलार्म नहीं बजा है। आपका जो फोन आ गया, उससे मैं जगी हूँ।'* ऐसे अनुभव गुरुजी हमें करवाते हैं। पर, रोना भी बहुत आया कि हमें अपनी जिम्मेदारी समझ कर यह करना चाहिए। मैं रात को एलार्म लगाना भूल गया और गुरुजी को तकलीफ लेकर, मुझे जगाकर, धुन करने के लिए याद दिलाना पड़ा! मतलब कितने लो लेवल पर आकर प्रभु हमारे साथ बरतते हैं!

प्रभु हमारी पल-पल रक्षा भी करते रहते हैं। अभी डेढ़ दो महीने पहले की बात है कि तृप्ति को पॅरलॅटिक एटॅक-जैसा आ गया था। छोटे-छोटे सिमटम्स दिखने शुरू हो गए थे। उसकी आँखों में कुछ नम्बनेस आ गई थी। हम आई स्पॅश्यालिस्ट को दिखाने गए तो उन्होंने कहा कि आँखों में पिम्पल्स हुए हैं, उसकी वजह से ऐसा है, तो वह ट्रीटमेन्ट कराई। चार-पाँच दिन तक वो चलता रहा। उसके बाद उसके चीक्स के ऊपर नम्बनैस आने लगी। फिर उसने एक दिन कहा– *जब भी मैं पानी पीती हूँ, मेरे मुँह से पानी निकल कर मेरे कपड़ों पर गिरता*

है – जैसे छोटे बच्चे पीते हैं, तब पानी गिरता है। मैंने कहा – *क्या पागलों जैसी बात करती हो!* कहती है – *नहीं, सच में मुझे ऐसा फील हो रहा है।* फिर उसने पानी पीकर मुझे दिखाया, तो सच में लॅफ्ट साइड से सारा पानी सरक कर नीचे कपड़ों पर गिरने लगा। फिर डॉ. वर्षा त्रिवेदी – जिन्होंने परछाईं दीदी के टाईम पर हमारी बहुत सहायता करी थी, जो तृप्ति की कज़िन सिस्टर हैं, उन्हें दिखाने गए। उन्होंने कहा कि ये सिम्टम्स ठीक नहीं लग रहे, आप तुरंत ही किसी डॉक्टर को दिखाएं। फिर एम.डी. डॉक्टर को दिखाने गए। जैसे ही उनकी केबिन में एन्टर हुए, तो बैठते ही उन्होंने कहा कि इसे तो पॅरलॅसिस है। मैं तो एकदम से शॉक्ड हो गया। मैंने बोला क्या? तो कहते हैं कि इसको तो पैरलॅसिस है। उसकी लॅफ्ट साइड में सिर से लेकर गर्दन तक एटॅक आ चुका है। उन्होंने सारा चेकअप किया फिर कहते हैं कि आप अर्जन्ट इसकी ट्रीटमेन्ट शुरू करवाओ। फिजियोथैरपी ट्रीटमेन्ट शुरू की और साथ में स्टीरॉईड्स दीं, क्योकिं फास्ट ट्रीटमेन्ट करनी जरूरी थी। यूँ तुरंत ट्रीटमेन्ट शुरू कर दी। घर आकर मैंने गुरुजी को फोन किया कि गुरुजी डॉक्टर कह रहे हैं कि ये पॅरलॅटीक अटैक है।

हम गुरुजी को फोन करते हैं, तो गुरुजी का कोई न कोई रिएक्शन होता है कि भजन करो, सारुं थई जशे...। पर, उस दिन गुरुजी ने कुछ नहीं कहा। बस, जय स्वामिनारायण कह कर फोन रख दिया। हमें हुआ कि गुरुजी को सब बताया है - हम इतने शॉक्ड हो गए - फिर भी गुरुजी की तरफ से कोई रिएक्शन नहीं था। फिर सोचा कि ऐसी सिरियसनेस गुरुजी को नहीं लगी या शायद ये चीज इतनी सीरियस नहीं होगी, इसीलिए गुरुजी ने रिएक्ट नहीं किया।

फिर, हमने तो ट्रीटमॅन्ट शुरू करवा दी। फिजियोथैरेपी ट्रीटमॅन्ट्स और मेडीसिन चालू थी। कुछ हफ्तों में इतना क्विक रिजल्ट दिखने लगा कि जो **डॉक्टर** उसको ट्रीट कर रहे थे, वे **कहने लगे कि उनकी हिस्ट्री में आज तक ऐसा केस नहीं आया कि इतनी फास्ट रिकवरी किसी ने दिखाई हो** और अभी तीन-चार दिन पहले ही उसकी लास्ट फिजियोथेरेपी खत्म हुई और डॉक्टर ने कहा कि शी इज़ हन्ड्रेड परसेन्ट क्यॉर और अभी कल वो दिल्ली भी आ रही है। तो, मेरे कहने का मतलब कि प्रभु हमारी रक्षा करते हैं। गुजराती में एक कहावत है – **'सूळीनो घा सोईथी काढे।' मानो हमारे प्रारब्ध में कुछ ऐसी कठिनाइयाँ लिखी भी होती हैं, लेकिन ऐसे संत – जो हमें मिले हैं, वो सारी चीज वेव - ऑफ कर देते हैं।** यूँ सारे अनुभव हमें गुरुजी की तरफ से मिलते रहते हैं, फिर भी हम उन्हें अपनी तरफ से निश्चिंतता नहीं दे पाते। गुरुजी के मुँह से कई बार मैंने सुना है कि जिस तरह के सेवकों की मैं एक्सपेक्टेशन करता हूँ, वैसे डिसीप्लीन्ड सेवक तैयार नहीं हुए हैं। तो, आज गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर पू. हरिभाई साहेब व सभी स्वरूपों से यही प्रार्थना है कि बस गुरुजी की मर्जी में रह कर - गुरुजी की अनुवृत्ति को समझ कर सेवा करने लग जाएं – ऐसे आशीष प्रदान करें।

प.भ. वल्लभदास फल्दु (राजकोट)

...वैसे तो गुरुजी के साथ मेरा संबंध करीब चालीस साल पहले का बहुत पुराना है। जब गुरुजी सांकरदा रहते थे, तब से मैं गुरुजी को पहचानता हूँ। बीच में बीस-पच्चीस साल ऐसे गुज़रे कि हम एक - दूसरे को मिल नहीं पाए। लेकिन मेरे दिल में जो गुरुजी की यादें थी, वो सदा वैसी ही रही थीं और हर रोज एक बार दिन में उनकी याद आ जाती थी। अब तीस साल बाद हम फिर मिल पाए। गुरुजी हमें जैसे पहले चाहते थे, वैसे ही

आज भी चाहते हैं। इसका उदाहरण देता हूँ–

मैं 10 जनवरी 2009 को अपनी पत्नी के साथ दिल्ली आ रहा था। सामान पॅक करके मैं और मेरी धर्मपत्नी निकलने वाले ही थे कि घर में लगी तारा बहन की मूर्ति नीचे गिर गई। मेरी पत्नी ने कहा कि *तारा बहन की तस्वीर गिर गई। महाराज जाने के लिए मना कर रहे हैं या हमें चेतावनी दे रहे हैं।* मैंने उसे तुरंत कह दिया कि *ऐसा गलत मत सोचना, क्योंकि हम तो गुरुजी की आज्ञा से ही दिल्ली जा रहे हैं।* **जब कोई सत्पुरुष हमें आज्ञा करते हैं, तब हमारे जीवन में यदि मुश्किलें आएंगी, तो भी वे सरलता से पार हो जाएंगी।** अजमेर पहुँचे, तो वहाँ ट्रेन कैन्सल हो गई। वहाँ हमें उतार दिया और कह दिया कि सब अपनी व्यवस्था कर लो। बस में चले जाओ या यदि ट्रेन से जाना चाहते हो तो जयपुर तक का बस में जाने का प्रबंध कर लो, वहाँ से आपको ट्रेन मिलेगी... रेलवे स्टेशन से रिफन्ड लेकर बस से हम जयपुर पहुँचे। फिर जयपुर से दिल्ली के लिए रवाना हुए। इस दौरान गुरुजी ने मुझे कई फोन किए कि आप कहाँ पहुँचे? मेरी पत्नी ने कहा भी कि गुरुजी से कह दो कि हमें तो कोई तकलीफ ही नहीं है। **रात को 12:00 बजे हम दिल्ली आए और मंदिर की गाड़ी में बैठ कर एक बजे मंदिर में आए। तब तक गुरुजी हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, वे सोए नहीं थे। ये क्या बताता है कि गुरुजी को हमारे प्रति कितना भाव है, कितना प्रेम है!** जबकि हम गुरुजी के प्रति नहीं रख पाते। फिर भी वो हमें प्यार करते हैं, हमें इतना सम्मान देते हैं।

मैंने कभी भी, कहीं भी–किसी सेन्टर में इतना नहीं देखा है। कोई संत 'गुरु' है, तो उसे मिलने के लिए हमें टाईम लेना पड़ता है। जब जाओ, तब गुरु मिलें–ऐसा नहीं हैं। यदि आप उन्हें बोलो कि मैं उनको मिलना चाहता हूँ, तो आप को टाईम देगें कि कल आओ, परसों आओ या शाम को आओ; लेकिन जब जाओ तब नहीं मिल सकते हैं। **पर, गुरुजी तो यहाँ मंदिर में चौबीसों घंटे बाहर ही बैठते हैं। जब भी आओ गुरुजी आप को मिल पाते हैं। यही एक विशेषता है यहाँ के मंदिर की। गुरुजी की यह विशिष्टता है कि सदा भक्तों के बीच में रहकर आनंद करते हैं-कराते हैं।** आनंद करते-करते हम अपनी साधना मार्ग में आगे चल सकेंगे।

एक सूफी संत ने कहा है–*'सदा ही प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।'* सदा प्रसन्न कौन रह सकता है? हम सदा ही प्रसन्न नहीं रह सकते। जब भी हम पर मुश्किलें–कठिनाइयाँ आती हैं, तो हम विह्वल और दुःखी हो जाते हैं। हमारी प्रसन्नता टूट जाती है। वो प्रसन्नता कौन रख सकता है? जो गुणातीत पुरुष हैं, जो गुणातीतभाव में रहते हैं, जिन्हें कोई चीज स्पर्श नहीं करती, वे यह प्रसन्नता रख सकते हैं। गुरुजी से मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी प्रसन्नता हम सभी के जीवन में आए।

एक और बहुत अहम् प्रसंग बताना चाहता हूँ 3 नवम्बर – लाभपंचमी के दिन मैं अपने नए घर में सामान शिफ्ट कर रहा था। जब सामान ले जाकर घर में रखा, तो मेरे मन में थोड़ा-सा विचार आया कि गुरुजी की इस घर में पधरामनी कराई जाए। पर, ये पधरामनी कैसे होगी? ठीक आठ दिन के बाद गुरुजी का फोन आया–*'वी.एम. क्या कर रहे हो?'* तो मैंने कहा कि *नए घर में सामान इधर-उधर रख रहा हूँ और जो कोई तकलीफें आ रही हैं, उन्हें दूर करने में लगा हुआ हूँ।* गुरुजी ने कहा– *10 तारीख को मैं राजकोट आने वाला हूँ।* यूँ, मैंने जो कल्पना की थी, उसके मुताबिक गुरुजी ने यकायक राजकोट का प्रोग्राम बना लिया। जब राजकोट में गुरुजी कांतिभाई के घर पर ठहरे थे, मैं वहाँ उन्हें मिलने गया। तो गुरुजी बोले – *वी.एम. मैंने कैसे*

ये राजकोट का प्रोग्राम बना लिया, मुझे भी मालूम नहीं हुआ। तब, मैंने गुरुजी को बताया– *आपको अपने घर पर बुलाने का विचार मेरे मन में आया था।* तो गुरुजी बोले– *तुम मुझे यहाँ तक खींच कर ले आए। राजकोट का प्रोग्राम तो मेरे मन में था ही नहीं–अचानक ये प्रोग्राम बन गया।* यूँ, हम गुरुजी को याद करते हैं, तो वे हमारी सुनते हैं…

अभी का प्रसंग है – यहाँ मैं 26 तारीख की सुबह चार बजे दिल्ली स्टेशन आ गया। गुरुजी ने पहले से मुझे फोन कर दिया था कि जब तुम आओ तो मुझे फोन कर देना। पर, मुझे फोन करने की जरूरत ही नहीं पड़ी। गुरुजी के सेवक ने सामने से फोन कर दिया कि आप पहाड़गंज की तरफ उतर जाना। वहाँ आपको स्वामिनारायण लिखी हुई गाड़ी मिलेगी; वो अपने मंदिर की गाड़ी है। वो गाड़ी ढूंढ कर वहाँ पहुँच जाना। मैंने गाड़ी ढूंढ निकाली और उसमें बैठकर मंदिर में आ गया। जब मंदिर में आया, तो गाड़ी की आवाज सुन कर गुरुजी अपने बिस्तर से उठकर बाहर आ गए। मुझसे बोले– *गाड़ी आई, तो मैंने सोच लिया कि वी.एम. आया होगा, इसलिए मैं बाहर आया।* मैं बोला– *गुरुजी आप सो जाओ, अभी तो साढ़े चार बजे हैं।* वे बोले– *सो जाएंगे, अभी तो तेरी राह देख रहा था।* यूँ गुरुजी हमारा कितना ध्यान रखते हैं? ये आप सब भी जानते हैं। तो, इस मंगल पर्व पर मैं प्रार्थना करूँगा कि गुरुजी हमेशा हमारे प्रति ऐसा ही भाव रखें और गुणातीत ज्ञान में जो हमारी कसर हो, वो आप निकालें। हमारे मन में कूड़े–जैसे अभिमान, हठ, मान, ईर्ष्या–जो भी चीज है, उसे निकालने के लिए मैं आज आपसे विनती करता हूँ। गुणातीतभाव में रहने की हमारी साधना सफल हो…

प.भ. दीपक अग्रवाल (मुंबई)

गुरुजी के बारे में जितना भी कहा जाए, उतना कम है। शायद हम लोगों ने–पर्सनली मैंने–उनकी इतनी महत्ता नहीं समझी क्योंकि **वे इतने ज्यादा फ्रीली और रॅडीली अवॅलॅबल हैं कि कभी भी ऐसा महसूस ही नहीं होता कि गुरुजी मिल नहीं पाएंगे। कभी भी फोन करो, तो गुरुजी हमेशा मिलेंगे।** ऐसा नहीं कि हम फोन करें और गुरुजी न हों। हाँ, कभी मानो फ्रॅश होने भी गए होंगे, तो उनका तुरंत फोन आ जाएगा कि क्या बात थी।

मुंबई में सिद्धि विनायक का मंदिर है। उसकी इतनी मान्यता है कि लोग करीब पच्चीस - तीस किलोमीटर दूर से भी नंगे पैर चल कर आते हैं और… वहाँ पर आने के बाद क्या होता है कि बाहर से पूजा की टोकरी ले ली और लाइन में लग गए। धक्का-मुक्की में जब तक मंदिर में पहुँचते हैं तब तक शायद कुछ फूल गिर चुके होते हैं; अगरबत्ती का कोई ठिकाना नहीं होता है। नारियल भी शायद नीचे गिर जाता है एकाध बारी। फिर किसी तरह अंदर पहुँचे और टोकरी किसी तरह जब पुजारीजी के पास पहुँचती है और आदमी हाथ जोड़ कर भगवान से प्रार्थना करनी शुरु ही करता है कि इतनी देर में पीछे से धक्का आ जाता है। साथ में– *'चलो, चलो, चलो, आगे बढ़ो-आगे बढ़ो'* करके पुजारी बोलता है। बाई धी टाईम, हाथ जोड़े हुए वह आदमी जब अपनी आँखें खोलता है, तो वो खुद को मंदिर के बाहर पाता है। तो भगवान से क्या बात की होगी? वह हो भी पाई या नहीं और अगर हुई भी होगी, तो वो 'वन वे' हुई होगी; 'टू वे' तो नहीं हुई होगी, क्योंकि भगवान से तो जवाब सुन नहीं पाया। लेकिन हमारे यहाँ अलग बात है। **गुरुजी के लिए चाहे छोटा बच्चा हो या कोई भी, वे इतने**

रॅडीली अवॅलॅबल हैं कि हम उनसे फोन करके कभी भी बात कर सकते हैं कि गुरुजी हमें यह प्रॉब्लम है। तो, **यहाँ खाली 'वन वे' नहीं, 'टू वे' है; जहाँ तुम्हारी पूरी बात सुन भी लेंगे और पूरा सोल्युशन भी देंगे।** पर, ये सब बातें हम रियलाइज़ ही नहीं करते। शायद ग्रांट्रेड ले रखा है कि ये हमारे हैं, तो ये करने ही वाले हैं।

ऐसी एक और बात–जब हम लोग स्कूल में थे, तब हमेशा ये होता था कि एग्ज़ाम आ गए हैं, तो गुरुजी-दीदी से आशीर्वाद लेकर ही जाना है और... जब फोन करते हैं, तो स्टॉन्डर्ड यही जवाब होता था कि ***'धुन करना और काकाजी को याद करके पेपर लिखना।'*** जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए, हर बार एक ही बात दीदी कहते– *'काकाजी, गुरुजी को याद करके धुन करके पेपर लिखना।'* मुझे एक बार हुआ कि ये क्या बात है कि हर बार यही एक चीज होती है, क्या फर्क है? पर, एक अजीब-सा कॉन्फिडन्स, एक अलग-सी ही मॉरल बूस्टिंग उस वक्त मिलती थी और आज जब मैं उसके बारे सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि वो चीज हमारे अंदर तक इतनी बैठ चुकी है कि अब डेईली रूटीन में जब भी हमारे एग्ज़ाम्स होते हैं, तो उस वक्त मुझे सोचना नहीं पड़ता कि मुझे क्या करना है। कोई भी ऐसा प्रसंग या कुछ भी होता है, तो मन में होता है कि चलो 'धुन' कर लेते हैं। काकाजी, गुरुजी को याद करते हैं तो सब इतना सरल हो जाता है कि उस बारे में हमें सोचना ही नहीं पड़ता। तो थँक यू गुरुजी कि आपने हमारे लिए यह इतना सिम्पल और ल्यूसिड फॉर्म में कर दिया है।

एक और बात के लिए मैं गुरुजी को जितना भी धन्यवाद करूँ वो बहुत ही कम है। वो यह है कि **गुरुजी ने जो दिव्य दीदी के साथ हमारा संबंध बनाया, उसके लिए काउन्टलॅस थँक्स टू यू।** जैसा कि आप सभी जानते हैं कि गुरुजी ने अक्षरज्योति की बहनों को दिव्य रूप से सत्संगी परिवार में एडॉप्ट करवाया है। उसी तरह दीदी का हमारे साथ रिश्ता बनाया है। **मुझे हमेशा एक चाहना थी मेरे ऊपर भी कोई बड़ा भाई या बहन होना चाहिए, जो मुझे हमेशा संभाल सके या मुझे बहुत लाड़ करे। वो दीदी के रूप में मुझे मिला है।** सो, दीदी इज़ लाईक 'सॅकन्ड टु नन', मतलब शी इज़ धी बॅस्ट। मेरे लिए तो थँक यू गुरुजी फॉर दीदी। **और... गुरुजी की महिमा समझाने में दीदी ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। हमारा गुरुजी से एटैचमेन्ट कराया। गुरुजी के साथ इन्टीमसी के लिए शी ईज़ बीईंग लाईक ए कैटलिस्ट कि गुरुजी से हम सही तरह से जुड़ सके और उनकी महिमा सही रूप से समझ सकें।**

गुरुजी हमारी हर छोटी-छोटी बात में इतना ज्यादा इन्वॉल्व हो जाते हैं कि हमें लगता ही नहीं कि हमें कुछ करना है। हमारी प्रॉब्लम्स गुरुजी की बन जाती हैं। जैसे अभी मम्मी-पापा की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह थी। तो मैं सोच रहा था कि उन्हें कुछ ऐसा गिफ्ट देना चाहिए जो कि उन्हें लाईफ टाईम के लिए एकदम याद रह जाए और बहुत ही अच्छा हो। काफी सोचा और जब गुरुजी से बात हुई, तो उन्होंने कहा मम्मी-पापा के लिए एक रिंग बनवाई है, जिसमें काकाजी की भस्म है। इससे बढ़िया गिफ्ट तो मैं सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा कुछ हो भी सकता है। सो थँक्स टु गुरुजी; आपके बर्थ-डॅ के दिन आई कॅन से थँक्स टु यू, फॉर वॉट एवर यू हॅव डन। सभी स्वरूपों एवं आपके चरणों में आज यही प्रार्थना है कि आप जैसा चाहते हैं, वैसा हम कर सकें–आपकी राह पर चल सकें।

प.भ. कौशिकभाई देसाई (एरु)

...ये दीपकजी को सुना, तो मैं एक बात सोच रहा था। जब मैं छोटा था, काकाजी को अकसर गुजराती में बोलते देखा था कि ये 'ठोठ बोठिया' ज्ञान नहीं है। मिन्स कि ये ज्ञान इतना सहज नहीं है कि आपको ऐसे उपलब्ध हो जाए। तब दिमाग़ सोचने लगता था कि ये बहुत बड़ी बात है। हमसे कैसे सिद्ध होगी? काकाजी से तो हमारा कुछ ताल-मेल जमेगा नहीं। जब ज्ञान समझने की हैसियत ही हमारी नहीं है, तो काकाजी की ये बड़ी-बड़ी बात हमसे नहीं हो पाएगी। पर, आज ये दर्शन हो रहा है और बहुत आनंद हो रहा है। आई कॅन नॉट एक्स्प्रॅस। काकाजी कहते थे – आपकी तैयारी है क्या? मेरे पास थाऊज़न्ड्स ऑफ फार्मूली हैं। **काकाजी-पप्पाजी जैसे पुरुष, दोनों भाई एक पक्के मिशन के साथ पृथ्वी पर आए थे, वो हक़ीक़त है।** पप्पाजी ने एक बार मुझे बोला – *'ये सांकरदा का गेट और मूर्ति ही तुम्हारे लिए कल्याण का साधन है। ज्ञान से तेरा कोई लेना-देना नहीं है।'* दोनों भाइयों की बात आज यहाँ साकार हुई दिखाई दे रही है।

कई सालों से मैं गुरुजी को भी देख रहा हूँ। गुरुजी जो बोल रहे हैं, वो सही बोल रहे हैं। गुरुजी को कोई लंबी कथावार्ता – प्रवचन जैसा करते मैंने कभी देखा ही नहीं है। जैसा-जैसा निमित्त एराइज़ हुआ, उसके जरिए जो मैसेज देना चाहते हों, वो दे देते हैं। जो साधक जाग्रत हैं, वो इसको झेल लेते हैं।

मेरा आप सभी को सॅल्युट है और उससे ज्यादा सॅल्युट ये सत्पुरुष को है। ये नक्षु को भी देख रहा हूँ। ऐसा ही प्यार हमको भी मिला। जब छोटे थे, तो सत्पुरुष के आसन पर हम भी बैठ जाते थे। गुरुजी – विज्ञानस्वामी बोलते कि ये तो पप्पाजी के लिए बनाया है। कहने का मतलब यह है कि 'स्वामिनारायण महाप्रभु' के समय से ही हम चले आ रहे हैं। हमारी जितनी-जितनी तैयारी थी और प्रार्थना, भजन और उनके वचन से हम जैसे भी पड़े रहे, हमारी प्रगति हुई है।

जब किसी अनुभव को हम फाईनल मान लेते हैं, तब वहाँ से हमारी साधना रुक जाती है। ठीक है, गुरुजी के साथ हमारा इतना नाता है, वे इतना प्यार करते हैं, हमारी सुन भी लेते हैं। बट, जैसे गुरुजी और किसी ने बताया कि मैं संतुष्ट नहीं हूँ। तो आज गुरुजी के जन्मदिन पर हमको मांगना है कि हम सतत जाग्रत रहें...

सो, हमारे लिए यह बात है कि **हम ऐसी किसी भी स्थिति को परम स्थिति न मान लें।** श्रीकृष्ण परमात्मा ने बोला था कि जब-जब धर्म का नाश होगा, तब मैं इस पृथ्वी पर आऊँगा। स्वामिनारायण भगवान ने हमारे लिए विशेष वरदान देकर हमें धन्य किया जिससे कि हमारा संबंध ऐसे सत्पुरुष द्वारा उनके साथ पर्मनन्ट रहेगा। तो, **इन सत्पुरुषों के साथ का संबंध पक्का करना है... वो बात हमारे हाथ से अभी निकल न जाए।** गुरुजी के साथ का हमारा संबंध उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाए – यही प्रार्थना।

प.पू. हरिभाई साहेब (माणावदर)

आज गुरुजी के प्रागट्य दिन के उत्सव पर बढ़िया महापूजा हुई... **स्वामिनारायण संप्रदाय में महापूजा का बहुत महत्त्व है।** आज महापूजा के बारे तीन बात करेंगे। भगवान स्वामिनारायण के समय में **पहली महापूजा गोपाळानंदस्वामी ने शास्त्रोक्त विधि से जूनागढ़ में शुरू की थी;** ताकि सब हरिभक्त, जो भगवान को भजते हैं, उन्हें आधि, व्याधि, उपाधि – कोई भी कठिनाई आई हो – उन कठिनाइयों से उन्हें मुक्ति मिले। इस हेतु गोपाळानंदस्वामी ने महापूजा का यंत्र भी बनाया था। वो यंत्र अभी जूनागढ़ मंदिर में रखा गया है। हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति बहुत प्रतापी मानी जाती है। काकाजी की आज्ञा थी कि जब भी जूनागढ़ जाओ, तो मंदिर जाना और आधा घंटा हरिकृष्ण महाराज के पास धुन करना...

दूसरी महापूजा गोंडल में शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से योगीबापा ने शुरू की। शास्त्रीजी महाराज ने लिखा कि ***जोगी! तुम्हारी प्रार्थना हरिकृष्ण महाराज – घनश्याम महाराज सुनते हैं, तुम्हें महापूजा शुरू करनी है।*** *महापूजा में तीन प्रार्थना करनी हैं:*

एक तो – मंदिर की आमदनी बढ़ जाए,

दूसरी – संतों की संख्या बढ़े

और

तीसरी – हरिभक्तों की संख्या बढ़े।

ये तीन प्रार्थना शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से बापा ने कीं।

पुराने भक्त हकाभाई खाचर बताते थे कि वहाँ गोंडल मंदिर में हिसाब-किताब संभालने के लिए उनकी नियुक्ति हुई थी। जब शास्त्रीजी महाराज की यह आज्ञा आई, तब मंदिर में सौ रुपये का कारोबार होता था। उन्हें विचार आया कि उनकी तनख्वाह पन्द्रह रुपये है, तो मंदिर की आमदनी भी बढ़-बढ़ के कहाँ पहुँचेगी। पर, अब आज देखो, ये योगीबापा के संकल्प से सब हो रहा है।

और... तीसरी महापूजा 6-डी, सोनावाला में काकाजी, पप्पाजी और बा ने मिलकर 8 अगस्त 1964 को शुरू करवाई, ताकि सभी निष्ठा के बल से जीवन की कठिनाइयाँ फॅस आउट करें। जीवन में धर्म, भक्ति, ज्ञान का क्या काम है? यू फॅस आउट डिफिकल्टी इज़ीली। धर्म का जो एक्सपीरियन्स है, वो बड़ी चीज है, पर एक्सपीरियन्स खुद का होना चाहिए। दूसरा कोई बोले कि मेरा ऐसा-ऐसा काम हो गया, इससे हमें क्या फायदा? हो गया, अच्छी बात है, हम नमन करते हैं। पर हमें तो खुद का अनुभव चाहिए। फिलोसोफी सिर्फ बोलने की फिलोसोफी न रहे। ज्ञान केवल 'ज्ञान' न रहे, ज्ञान का 'विज्ञान' बने। हमारा वो जीवन बने... धर्म, भक्ति, ज्ञान से जीवन की कठिनाइयाँ झेलने में हमें मदद मिलती है। यू बीकम एबल टू फेस आउट।

...गिरनार में एक वनस्पति होती है। जिसे 'काडिया कंद' कहते हैं। वो खा लो, तो एक वीक आपको कुछ खाना नहीं पड़े। सॅकन्ड वर्ल्ड वार जब हुई थी, तो लड़ाई में सैनिक को हर समय तैनात रहना पड़ता था।

इसलिए जर्मनी के वैज्ञानिकों ने ऐसी टॅबलेट बनाई थी कि रोजाना सुबह एक टॅबलेट खा लो, तो पूरे दिन कुछ खाने की जरूरत नहीं। **हमें काकाजी से ज्ञान टॅबलेट फॉर्म में मिला है। पकाने-करने की या परोसने की कोई जरूरत नहीं है।**

दिल्ली में मामगेन रहते थे। पहले तो वे कस्टम कलेक्टर थे और बाद में कमिश्नर एवं चीफ कमिश्नर हो गए। पहले वडोदरा रहते थे, तो उन्होंने सुना होगा कि गिरनार में बहुत सिद्ध रहते हैं। घर छोड़ के दो महीना वहाँ चले गए कि गिरनार में कोई सिद्ध मिल जाए, तो अपना काम हो जाए। सम्पत्ति की कोई लालसा नहीं थी, बस अपना जीवन धन्य बन जाए। तो दो महीना वहाँ ठहरे, पर ऐसा कोई सिद्ध नहीं मिला।

फिर, वडोदरा में किसी ने बोला– गोंडल में योगीजी महाराज बहुत बड़े संत हैं, तुम उनके पास जाओ। गोंडल अक्षरमंदिर गए और वहाँ 'योगी स्मृति' में बापा का जैसे ही दर्शन किया, तो उनके पूरे विचार बंद हो गए। अंतर में एकदम शांति-शांति हो गई। वो मूर्ति के नीचे ही बैठ गए और दो घंटे के बाद जाग्रत हुए। उन्होंने वहाँ ऑफिस में जाकर पूछा कि जो मूर्ति लगी हुई है, मुझे उनसे मिलना है। तो, ऑफिस वाले ने बोला कि भौतिक देह का उन्होंने त्याग कर दिया है। बड़े निराश होकर वे वडोदरा अपने घर आ गए। उनकी पत्नी उषा बहन को चिंता बनी रहती थी कि यूँ कभी ये घर छोड़ कर चले गए, तो हम मुश्किल में आ जाएंगे। विद्यानगर में चल रहे अनुपम एड्हेझीव्ज़–'बा-बेन गम' पर लगती एक्साइज़ चेकींग करने के लिए इंस्पेक्टर आए थे। वहाँ डॉ. सनंदभाई ने उन्हें बताया कि *हमारे यहाँ तो सब साधक हैं और ऐसे यहाँ सेवा करते हैं। यहाँ साधना करते हैं और कर्मयोग से फैक्टरी चलाते हैं, यूँ कर्मयोगी संत हैं। जो मुनाफा मिलता है, वो ट्रस्ट में जाता है।* उनको अचरज हुआ कि ऐसा तो कभी सुना नहीं कि तुम मेहनत करो और पूरा पैसा ट्रस्ट में जाए! कैसे संभव है? उन्होंने जाकर मामगेन साहब से बात की। तो, मामगेन ने कहा हम एक बार चलेंगे। इंस्पॅक्ट करने के लिए मामगेन साहब आए तो डॉ. सनंदभाई ने बात करी कि हमारे **'पप्पाजी'** ऐसे पुरुष हैं, उनके नीचे हम सब साधना करते हैं और हमारे **'साहेब'** भी हैं। वे बोले कि पप्पाजी के हमें दर्शन करने हैं। मामगेन साहब ने पप्पाजी के दर्शन किए, तो जैसे गोंडल में योगीजी महाराज का दर्शन करके संकल्प बंद हो गए थे और शांति हो गई थी, वैसी शांति हो गई। आधा घंटा वे ध्यान में चले गए और बोले– *बस मेरा समाधान मिल गया* और... पप्पाजी ने भी बोला– *लाओ, इन्हें कंठी पहनाते हैं और हरिभक्त बना देते हैं।* फिर दूसरी बार वे अपनी पत्नी को लेकर आए, तो देख कर वो बोलीं कि *अभी हमें शांति हो गई है कि मामगेन का अब दूसरी जगह आना-जाना बंद हो गया। हमें अच्छा रहेगा कि घर छोड़ कर नहीं जाएंगे।* उनका एक लड़का था 'सौम्य'। जवान और नया-नया ही सर्विस में लगा था। सर्विस पर गया था कि उसको अचानक हार्ट एटॅक आया और वो चल बसा। हमें पता चला, तो वडोदरा से फोन किया। वे तनिक भी दुःखी नहीं थे। उनकी पत्नी ने तो कहा कि *भगवान का था और उन्होंने ले लिया।* अब एक ही लड़का और ऐसे चला जाए, तब ऐसे स्थिरभाव में–तटस्थभाव में रहना, वो बहुत बड़ी बात है। इसे हम बोलते हैं, 'ज्ञान' ज्ञान नहीं रहा, 'विज्ञान' हुआ। जीवन में हम ऐसे झेल पाएं और उतार सकें, इसलिए सभी सेन्टरों में महापूजा होती है। उसके पीछे हेतु यही था कि हमारे समाज के हर व्यक्ति के जीवन में सुख-शांति और आनंद बना रहे और भगवान का होकर, संपूर्ण समर्पित होकर वो जी सके।

काकाजी ने तो बोला कि *रिडॅम्प्शन ऑफ सोल–मरने के बाद नहीं, जीतेजी अक्षरधाम और... धी रिडॅम्प्शन, नॉट ऑफ सोल ऑनली, बट मन, बुद्धि, चित्त, अहं का पूरा ट्रान्स्फॉर्मेशन हो जाए और भगवान का पूरा वास उसमें हो जाए।* हम वेटलेस-स्ट्रेसलेस हो जाएंगे। हाऊ इज़ इट पॉसीबल? जैसे दो सौ किलोमीटर ऊपर जाओ, तो गुरुत्वाकर्षण नहीं है, इसलिए वेटलेस पोज़ीशन है। ऐसे चित्त की तरलता, सरलता रखो और लिक्विड फॉर्म में रहो। लिक्विड यानि–पानी को जग में भरो, तो जग का आकार लेता है, लोटे में भरो तो लोटे का, ग्लास में भरो तो ग्लास का। वो पानी बर्फ हो जाएगा, तो फिर काटना-तोड़ना पड़ेगा। पानी जैसे तरल बनते रहो। पानी की तरह बहते रहो। **बहता पानी गंदा नहीं होगा और निर्मल जल बना रहेगा। यदि कहीं रुक गया, तो गंदा हो जाता है। तो हम तरल बनें–सरल बनें और पॉज़िटिव बनें, तो जीवन जीने का बहुत बड़ा आनंद आएगा और लगेगा कि हमारे जीवन में जो घटना घटती है, वो हमें मिले हुए प्रत्यक्ष संत की दया ही है।** वे ही कर रहे हैं, तो अच्छा ही करेंगे। ऐसी भावना रख कर चलेंगे तो जैसे-जैसे हमें अनुभव होंगे, वैसे-वैसे जीने में हमें बहुत आनंद आएगा।

हम सभी का ऐसा आनंद परमॅनन्ट रहे, वो क्षणभंगुर नहीं रहे और... अभी भजन में बोला नौ-खण्ड धरती में 'स्वामिनारायण मंत्र का जय-जयकार रहे।' ये पृथ्वी में नौ-खण्ड शास्त्रोक्त माने गए हैं। नौ खण्ड में ये पूरी पृथ्वी आ जाती है। हमारे लिए- पाँच इन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण-नौ खण्ड हैं। इन नौ-खण्ड में 'स्वामिनारायण' मंत्र का जय-जयकार हो, तो काम पूरा, न रहे कुछ अधूरा। बस, आनंद करते रहो और साक्षी बनकर जिओ। ऐसा हम सब के जीवन में हो जाए–ऐसी आज के शुभ दिन की प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

अभी इलेश ने बात करी कि जब प्रवचन सुन-सुन के, कथावार्ता सुन-सुन के सभा शून्य मनस्क हो जाएं, तो महाराज कहते–चलो कीर्तन गाओ। वाकई, प्रवचन सुन-सुन के मैं थोड़ा डूब-सा गया था। पर इसने (इलेश ने) ऐसी स्मृति का भजन गाया कि मुझे बापा की और काकाजी की स्मृति में एकदम डुबो दिया। मैं खुश हो गया। ये संत लोग जो आए हैं, वो हमारे पुराने जोगी हैं। वो शायद इस प्रसंग को जानते भी होंगे। हाँ! इसके पीछे का मर्म नहीं जानते होंगे कि क्यों यह घटना बनी थी। जब हम अक्षरभुवन में थे तो हॉल में सभा होती थी और संतों की बोलने की बारी लगती थी। वो सॅटिंग पू. डॉक्टर स्वामी करते थे। मुझे बोलने का जमता नहीं था। एक-दो बार तो डॉक्टर स्वामी को कहा कि *मेरा नंबर बाद में रखना।* यूँ करके टालता रहा। पर वो कितना लंबा चले? फिर एक बार डॉक्टर स्वामी ने कह दिया कि *अब कुछ नहीं, तुम्हें बोलना ही पड़ेगा।* मैं उस दिन खूब डूब गया। मैं रात को बापा के रूम में जाकर बैठता था। उस दिन भी गया था और बापा बाथरूम के लिए उठे-करे, तो हाथ पकड़ने के लिए मैं खड़ा रहा था। फिर...

बापा ने अंधेरे में ही मुझसे पूछा– *शुं थयुं? (क्या हुआ?)*

मैंने कहा– *कांई नहीं, एमज। (मैंने कहा कुछ नहीं, ऐसे ही।)*

तो बोले – *मोढुं तमारुं पडी गयुं छे ने ? (तुम्हारा मुँह क्यों लटक गया है।)*

फिर बहुत पूछने पर मैंने कहा – *बापा, कल मेरी बोलने की बारी है।*

तो बोले – *हमें तो महाराज को याद करके बोलना है।*

मैंने कहा – *मुझे जमता नहीं है।*

तो बोले – *डॉक्टरस्वामी को कहना कि मैं बाद में बोलूँगा।* (बापा ने बैठते हुए ये बात करी)

मैंने कहा – *बापा, मैंने दो-तीन बार डॉक्टर स्वामी को कहा है और दो-तीन बार वो टाल चुके हैं।*

बापा ने कहा – *दोबारा कहना।*

मैंने कहा – *बापा, अब वो मानेंगे नहीं।*

तो बोले – *ऐसा है ?*

मैंने कहा – *हाँ।*

तो बोले – *फिर तो बोलना।*

मैंने कहा – *पर, मुझे जमता नहीं।*

तब बोले – *हम ऐसा करेंगे, ये शंकर भगत आया है न, उसको मैं कहूँगा और हम सभा लंबी चलाएंगे। उस भजन में हम इतना समय निकाल देंगे कि फिर टाइम हो जाएगा और डॉक्टरस्वामी तुम्हें मना कर देंगे।*

फिर मुझे बोले – *बस, अब राजी हो।*

मैंने कहा – *हाँ, ये ठीक है। (यह ठीक है बापा।)*

वो तो फिर सो गए। सुबह मुझे हुआ कि रात को जो बात हुई, ये तो सारे दिन में भूल जाएंगे और शाम को मेरी मुसीबत हो जाएगी।

सो, बापा पूजा में बैठे थे, तब मैंने फिर कहा – *आप शाम को भूल नहीं जाना।*

तो बोले – *हाँ, मुझे शाम को सभा में याद दिला देना।*

शाम को जब धून हो रही थी तो मैं जाकर बोल कर आया – *आप भूलना नहीं।*

तो बोले – *हाँ, मुझे याद है।*

संतों को याद हो तो उस दिन शंकर भगत को खूब नचाया था और वो भी इधर से उधर नाचता रहा। संत लोग खुश होकर तालियां बजाते रहे और संत लोग जब तालियां बजाएं, तो उसको और जोश आ जाए। यूँ खूब लंबी सभा चली। पर, भगत लोग सारे बिगड़ गए। हर एक को ऐसा कि बापा का लाभ लेना था, ये बीच में फितूर कहां आ गया ? वो लोग संतों पर बिगड़ गए कि ये संत लोग इसको चढ़ाते रहते हैं। मैं सोचता रहा कि बापा ने मेरा कितना पक्ष रखा था। मैंने अक्सर देखा है कि **बापा ने – काकाजी ने मेरी वीकनॅस की खूब लीपा-पोती करी है।** तो ये (इलेश) जब गा रहे थे, तो मुझे सारी बातें याद आती रहीं।

ऐसा काकाजी ने करा था। आपको ख्याल होगा 26 जनवरी को जब आख़िरी आशीर्वचन काकाजी का हुआ तो पंजाब के हरिभक्तों के लिए इन्होंने हिन्दी में बात करी थी। तब बोले थे – ***'मेरे बड़े भाई ने काली***

रोटी, सफ़ेद दाल (मालपूड़ा और रबड़ी) की रसोई करवाई। गुणातीत ज्योत की बहनों ने इतना परिश्रम किया...' यूँ खूब बखान किया। फिर बोले– ***'आप लोगों ने आज जो सेवा दी है, वो गुणातीत ज्योत को अर्पण कर देनी है। (यदि) न दी हो तो पच्चीस - पच्चीस महापूजा करा देना'*** – यूँ उन्होंने पैसे इकट्ठे किए, फिर वो फंक्शन खतम हुआ – करा। और... मुझे पत्रिका लिखवानी थी, सो मुझसे बोले कि तू 'प्रभुकृपा' में आना, पत्रिका लिखवा दूंगा। फिर हम लोग 'प्रभुकृपा' में गए। पहले तो पप्पाजी के रूम के पास काकाजी के सोने की रूम थी, वहाँ हम बैठे थे। थोड़ी देर बैठे - करे, फिर बोले कि यहाँ नहीं, पप्पा सो रहे हैं। हम बातें करेंगे, तो डिस्टर्बन्स होगा, हम टेलीफोन वाली रूम में चलते हैं। फिर हम वहां गए। बातचीत करी, पत्रिका लिखी - करी। फिर मुझे कहते हैं कि सुबह जो पैसे इकट्ठे हुए हैं, वो इन लोगों को नहीं देने हैं। यहाँ पैसे की कोई जरूरत नहीं है। सात सौ या सत्रह सौ थे। तू दिल्ली ले जा, वहां तुझे काम लगेंगे। मैं सोचूँ कि छोटी-छोटी चीजों में मेरा कितना पक्ष रखा हुआ है। बाकी दूसरों को ऐसा लगे कि काका तो पैसे उठा कर ले गए।

...यूँ ये इलेश ने मुझे एकदम फ्रॅश कर दिया...

29 मार्च 2009 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव के दिन की प्रातः सभा

प.पू. अध्यात्मानन्दस्वामिजी (अमदावाद)

देखिए, **हमारी गुरु परंपरा शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के पास से आई है।** मेरा गुरु स्थान तो ऋषिकेश में है। गुरु भगवान श्री शिवानन्दजी महाराज, स्वामी चिदानन्दजी महाराज हैं, किन्तु बचपन से ही स्वामिनारायण के संतों का बहुत ही सत्संग करने का सौभाग्य मिला। हमारे पिताजी के मामाजी के घर में शास्त्रीजी महाराज जाते थे और योगीजी महाराज पास बैठकर ऐसे हाथ मारते थे – 'धब्बा'। स्वामिनारायण का प्रसाद 'बंटागोली' बहुत खाई है। **मैंने इन संतों को बहुत निकट से देखा है; इनके जीवन की सरलता को देखा है। स्वामिनारायण नाम में उनकी श्रद्धा अटूट थी, जैसे गुरुजी की काकाजी के नाम में है। काकाजी ही माता-पिता, बंधु - सखा ! एक श्वास में काकाजी अंदर आते हैं और एक श्वास में काकाजी बाहर जाते हैं। अहंकार नहीं पकड़ा है।**

...हम संन्यासी हैं, तुम गृहस्थी हो। गृहस्थी होता क्या है ? गृहस्थी तो नीचा होता है। मोरारजी देसाई को हमारे फंक्शन में बुलाया था। वे तब ९९ साल के थे। वे आए तो उन्होंने जूते अपने आप निकाल दिए। दीप प्रज्ज्वलित इत्यादि के बाद जब वे जाने लगे, तो जूते पहनने में मुश्किल हो रही थी। मैंने झुक कर उन्हें जूते पहनाए। वे बोले – स्वामिजी, दुनिया देख रही है। दुनिया न भी देखे, पर मैं तो देख रहा हूँ, भगवान देख रहे

हैं। इतना बड़ा अत्याचार न करो। हम तीसरे आश्रम के गृहस्थी हैं, आप चतुर्थ आश्रम के संन्यासी हैं। आपके हाथों जूता पहनना मेरे लिए बहुत बड़ा पाप होगा। मैंने कहा–मोरारजीभाई देखो, इतनी अवस्था में! किन्तु गुरुजी संन्यासी हैं, चतुर्थ अवस्था में; काकाजी-पप्पाजी गृहस्थी थे, किन्तु जिस गृहस्थी के पास से उन्होंने जो गुण प्राप्त किया, वो पत्थर से भी क्यों न प्राप्त किया हो, वो मेरा गुरु है। ये तो एक महापुरुष थे, इनको यहाँ पर क्यों बिठाया? गृहस्थी हैं, साधु का चोला तो नहीं डाला। नहीं, **ये जितने हैं, वो तमाम साधु हैं।** इनकी (गुरुजी की) प्रेरणामूर्ति हैं, इसलिए यहाँ पर बिठाया। शास्त्रीजी महाराज में–विशेष रूप से स्वामिनारायण नाम में–योगीजी महाराज की जो भक्ति थी, वो जबरदस्त थी। कोई आकर बोलेगा– *बापा, मेरा लड़के में खोट हो गई, शादी नहीं हो रही।* वे कहते–*'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' बोलो, शादी हो जाएगी*; तो हो भी जाती थी। **महात्मा के वचन से जो नहीं होना है, वह भी होता था।** फिर एक दो साल के बाद में आएगा–*बापा शादी तो हो गई है, बच्चा नहीं हो रहा है। 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करो, हो जाएगा;* बच्चा भी हो गया। अभी दो-तीन साल के बाद में फिर वही बन्दा आएगा, *महाराज! बच्चा तो हो गया है, पर ये बच्चा होने के बाद में मियाँ-बीबी में पटती नहीं है। घर में क्लेश हो गया है, इसको छोड़ना चाहिए। 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करो छूट जाएगा।* वो एक ही चाबी थी– **एक ही चाबी। योगीजी महाराज की 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' में अखूट श्रद्धा थी।** उन्हें सांप ने काट खाया, लोगों ने बोला ये करेंगे-वो करेंगे। वे बोले–*कुछ नहीं करेंगे बस! 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करो।* अक्षरदेरी का जल छिड़का। सांप के दंश की वजह से उंगली टेढ़ी हो गई और सारे जीवन ऐसी रही। **जीवन मृत्यु का एकमात्र आश्रय–'स्वामिनारायण'!**

आज एक महापुरुष के प्राकट्य उत्सव में आप सभी लोग आए हैं... संत के उत्सव में जब आना होता है, तो क्या मिलेगा? लड्डू मिलेगा, घारी मिलेगी, बासुंदी मिलेगी, शीखंड मिलेगा, चटपटा खाने को मिलेगा, समोसा मिलेगा, ये सब स्थूल हैं, उनकी तो टट्टी हो जाएगी। एक अमृत छक के जाना। पंजाबी में कहते हैं–

अमृत छक के जाए, नानक नाम जहाज चढ़े सो बेड़ा पार,
नानक नाम चढ़दी कलां तेरे बाणे सर्वद्दा भला, नानक नाम जहाज।

गुरु नानक देव महाराज ने भी गुरु की महिमा–रब की महिमा कहते हुए पूरे भाव से यह कहा। अपने को बड़ा नहीं बताया! तभी लोग कहते हैं–गुरु नानक। उन्होंने कहा– *हे ईश्वर! तेरे चाकर के जूते की राख...* ये गुरुजी में जो भक्ति है न, वो गुरु नानकदेवजी महाराज, गुरु गोविन्दसिंहजी महाराज, प्रमुखस्वामिजी महाराज या स्वामी रामदास, शिवाजी महाराज, विवेकानन्दजी महाराज वगैरह तमाम गुरु जो बड़े-बड़े संत हुए, वे उनके पथ पर चल रहे हैं... विजयपाल मुझे लेने आए थे। मैंने कहा, **गुरुजी का जो जन्म दिन है, वो गुरुजी के शरीर का जन्म दिन नहीं है; ये सांस्कृतिक समन्वय का जन्म दिन है।** सांस्कृतिक समन्वय के बारे में इनको पूछो–इन महात्माओं को जो बड़ौदा में–सोखड़ा में रहते हैं। धारीमांथी योगी बापा आव्या। स्वामिनारायण में आने वाले इनके सारे पटेल, पटेल, पटेल; सौ में से निन्यानवे पटेल। बच गया तो कोई एक नॉन पटेल; यहाँ कोई पटेल नहीं है। यहाँ तो वर्मा है, शर्मा है, गुप्ता है, सरदार है, जैन–सब हैं...

ट्राई टू बी हम्बल, ट्राई टू बी सिम्पल, ट्राई टू बी नोबल; जितना विनम्र बन कर रह सकते हो, क्योंकि गुरुजी लोगों को यह बोलते हैं। **वे यहाँ आए मोहल्ले ने उनको 'गुरुजी' बोलना चालू कर दिया।** ये सबसे सरल व्यक्तित्व है। **उन्होंने काकाजी के प्रति अपना शिष्यत्व छोड़ा नहीं। 'स्वामिनारायण मार्ग' में 'काकाजी लेन' कर दिया। अरे ! काकाजी की पोस्टल स्टॅम्प छपवाई है।** मैं उस टाईम पर था। देखिए, अपने गुरु के प्रति क्या-क्या करते हैं? **...ऐसी अनन्य भावना गुरुजी की अपने 'गुरु' के प्रति है। चैतन्य महाप्रभुजी** ने कहा– ***यदि मेरे गुरु शराब के कोठे पर जाएंगे, तब भी मेरे गुरु के समान कोई गुरु नहीं। क्योंकि शराब के कोठे में भी वो किसी को नामदान– मंत्र दीक्षा देकर ही आएंगे। उसका कल्याण ही करके आएंगे।*** पंजाबी में बोलते हैं न, गुरुजी मैं पतंग की डोर मैनू कट्टी ना; मैनू छड्डी ना। **हे गुरुजी ! मैं पतंग की डोर हूँ जिसकी फिरकी आपने पकड़ कर रखी है। वो काट नहीं देना, मुझको छोड़ नहीं देना।** 'मैं तो शरण तिहारी'– ऐसी भावना लेकर जिओ; गुरुजी में आपकी भक्ति पूरी रखो; स्वामिनारायण भगवान में पूरी रखो; गुरु नानक देव में–जहाँ-जहाँ भी हैं–पूरी रखो। अनन्यभक्ति रखना; 'अनन्य' से मतलब–उसको छोड़कर कुछ नहीं... ऐसी हमारी शरणागति हो जाए। यही इस जन्मदिन की हमारे गुरु महाराज के चरणों में भेंट हो।

प.पू. निर्मलस्वामिजी (समढियाळा)

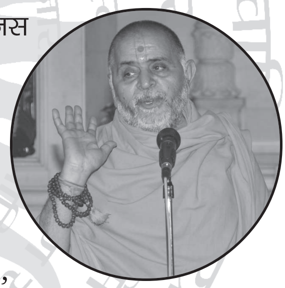

...खूब आनंद की बात है... पवित्र दिन है और पवित्र स्थान। आप सभी जिस चादर पर बैठे हो, वो सत्संग की चादर है; आप जिस आसन पर बैठे होंगे, वह आध्यात्मिकता का आसन है। गुरुजी ने फोन किया कि आप आओ। वे मेरे परम मित्र हैं। युवक में मैंने देखा, संत के रूप में देखा है। **आज आध्यात्मिक लेवल में गुरुजी ने जो भक्ति करी है, उसके तोल में कोई आ नहीं सकता। गुरुजी के हृदय में भक्ति है।** भगवान स्वामिनारायण कहो, गुणातीत संत कहो, भगवान कृष्ण कहो, लेकिन भगवान के चरित्र का जो गान है, वह अति उत्तम है और भगवान के जो चरित्र हैं, उसे मैं या आप जचाँए, तो हमारा काम हो जाए। योगीजी महाराज गोंडल में विराजते थे। स्वामिजी महाराज (पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी) भी बोले कि योगीजी महाराज की सरलता, निर्दोषता, विशालता, उनकी साधुता और उनकी सादगी, वो अद्‌भुत थी।

योगीजी महाराज के पास एक भाई आए। उनकी व्यावहारिक–सांसारिक फरियाद थी कि हमारे घर में रोज का क्लेश बढ़ गया है। उसकी पत्नी और माँ का रोज झगड़ा होता है। वह परेशान हो गया, इसलिए योगीबापा के पास आकर उसने फरियाद करी– *मेरे घर का क्लेश बढ़ गया है, तो कुछ प्रार्थना या आशीर्वाद नहीं, मंत्र दें...* पप्पाजी वहीं बैठे थे; वे बोले– *'आशीर्वाद दो–ऐसा कहो।'* वो बोला– *नहीं, मंत्र दें।* तो बापा बोले कि *मंत्र तो मैं देता नहीं, वो तो हमारे दादुभाई साहेब देते हैं।* फिर वो केस गया काकाजी के पास। तो दोनों पति–पत्नी काकाजी के पास गए और काकाजी को सारी बात करी। काकाजी के पास सब कुछ था। मुझे अनुभव भी है कि **जैसा दर्दी आए, वैसी दवाई काकाजी के पास थी।** सो, काकाजी ने उसकी पत्नी से

कहा– *कल तू एक चुसनी लेकर आना। फिर कल मंत्र दूँगा।* अगले दिन दोनों पति-पत्नी काकाजी के पास गए। वह एक चुसनी लेकर आई थी। काकाजी ने थोड़ी देर हाथ में रखी। काकाजी तो 'स्वामिनारायण' मंत्र बोल रहे थे, उसे लगा कि हाथ में लेकर इसमें मंत्र मार दिया है। फिर उस औरत से कहा– *'तेरी सास तेरे पास आकर झगड़ा करे, तो ये चुसनी तू मुँह में रखना।'* उसने काकाजी की आज्ञा पाली और जैसे ही उसकी सास झगड़ा चालू करे कि वह चुसनी मुँह में ले ले। यूँ आठ-दस दिन उसने चुसनी मुँह में रखी; सो, वो सामने बोल ही नहीं पाई। दस दिन में उसकी सास को ऐसा हुआ कि यह मेरा इतना सहन करती है और कुछ बोलती नहीं। सो, उसकी सास ने उससे माफी माँगी कि *अब मैं तेरे साथ झगड़ा नहीं करूँगी।* सो, दोनों पति-पत्नी अगले दिन काकाजी के पास आए। स्त्री ने काकाजी को बात करी कि *ये चुसनी आप वापिस ले लो और हमारा सारा समाधान हो गया है।* काकाजी ने उसे कहा– *ये चुसनी मंत्र मार कर दी हुई है, तू इसे अपनी जेब में ही रखना। जब जरुरत पड़े, इसका प्रयोग करना।* योगीबापा और काकाजी का संबंध देखो!

...भगवान के स्वरूप और महान पुरुषों को समझने और उनके साथ रहने के लिए खूब सावधानी वर्तनी। नज़दीक रहो, तो सावधानी से रहना। पर, कल लीलावती हॉस्पिटल से स्वामिजी के पास से मैं एक नया सूत्र लेकर आया हूँ। 'भगवान की सेवा में रहते अंतेवासी सेवकों से भी दूर रहना'–उनका भाव, उनकी भक्ति, सेवा हम समझ न सकें और कुछ गड़बड़ हो जाए। इसलिए भगवान के अंतेवासी (निजी) सेवक से दूर रहना।

योगीजी महाराज के प्रसंगों से हमें कई अच्छी-अच्छी बातें सरलता से मिलती हैं। एक बार उनके पास दो भाई आए और कहा कि *हम दोनों का झगड़ा हुआ है।* काकाजी और पप्पाजी वहीं बैठे थे। दोनों भाई बोले कि *दोनों का केस हुआ है और दोनों को महीने में दो-दो बार कॉर्ट जाना पड़ता है। तो, आप हमें मार्गदर्शन और आशीर्वाद दो।* बापा ने कहा– *आओ, गुरु! आशीर्वाद देता हूँ कि दोनों जब कॉर्ट में जाओ, एक साथ मिलकर जाना।* काकाजी सोच रहे थे कि केस और कॉर्ट को मेलमिलाप से क्या लेना देना? बापा ने बड़े भाई से कहा कि *छोटे भाई को संभालना।* छोटे भाई से कहा कि *बड़े भाई का सामान तू ले लेना। पर, कॉर्ट में जाओ तो एक साथ जाना।* फिर दोनों कॉर्ट में एक साथ जाते और बापा का अनुसंधान रखते। एक बार दोनों भाई कॉर्ट में बैठे थे। दोपहर के बारह बजे, तो बड़े भाई ने कहा– *जा, जाकर वकील को पूछ आ कि केस का क्या है?* छोटा भाई पूछने गया, वकील ने कहा– *आज केस नहीं चलेगा, मुद्दत है।* छोटा भाई बड़े भाई के पास आया, देखा तो उसके जूते वहाँ नहीं थे। उसे हुआ कि योगीजी महाराज की आज्ञा से हम साथ में आते हैं और मैं उसका सामान उठाता हूँ, लेकिन वो मेरे जूते नहीं संभाल सका। उसने पूछा– *मेरे जूते कहाँ हैं?* तब बड़े भाई ने बताया– *तेरे जूतों पर धूप पड़ रही थी, सो वे मैंने संभाल कर छाँव में रख दिए हैं।* कॉर्ट में वहाँ समाधान हो गया। यह योगीजी महाराज का सूत्र–**'मिलजुल कर रहना' – कितना सरल सूत्र है!** कोई मंत्र दिया था या धब्बा मारा था? लेकिन, बस–'मिलजुल कर रहना!'

...हम देखते हैं कि **योगीबापा कैसे संत? उनके कृपापात्र गुरुजी**–51 योगेश्वरों में मैंने देखा है, मेरे साथ भी रहे हुए हैं। **हम भी भगवे कपड़े वाले हैं, गुरुजी के भी भगवे कपड़े हैं। लेकिन, अंदर**

आध्यात्मिकता का लेवल कुछ ऊँचा है। भगवान के धारक संत हैं। हम इतना कह सकते हैं कि योगीबापा के हम संत हैं; लेकिन हम गुरुजी की तरह हैं–ऐसा हम नहीं बोल सकते।

...गुरुजी तो गुरुजी हैं... वो हमारे साधु समाज के शीलवान संत कहे जाएं और... ये शील बिकता नहीं है। शील ऐसे ही नहीं मिलता। **शील आशीर्वाद से मिलता है और शील वारसे में मिलता है। उस वारसे का हम गुरुजी में दर्शन कर रहे हैं।** आप तो समझते हो कि साधु के लिए साधु के बारे में बोलना बहुत मुश्किल है...

योगीजी महाराज दरबारों के भगवान कहे जाते थे। क्यों? दरबारों को खाना खिलाते, उनके कपड़े धो देते, उनका बिस्तर लगा देते। तो, वे कहते कि *योगीजी महाराज जैसा कोई संत नहीं।* दरबारों की बैठक अलग होती थी और बहनों का स्थान अलग होता था। योगीजी महाराज पोस्ट लिख रहे थे; हरिप्रसादस्वामिजी और काकाजी साथ में थे। उस समय दरबार में नाई आया था और उसके (दरबार के) बाल उतार रहा था। नाई का लड़का घर से दौड़ता हुआ आया और बोला– *बापू , मेहमान आए हैं, जल्दी आओ।* नाई ने कहा – *बापू के बाल उतार कर आ रहा हूँ।* यह बात तो सही थी, कुछ गलत तो कहा नहीं था। योगीजी महाराज ने चश्मा उतार कर रख दिया और नाई को बुलाया– *गुरु, यहाँ आओ। 'बापू के बाल उतार कर आ रहा हूँ' – ऐसा नहीं कहना; बल्कि 'बापू के फूल उतार कर आ रहा हूँ।' ऐसा कहना।* यह थी– **'वाणी अमृतथी भरी मधुसमी!'**

...जिस संत में सरलता न हो, उसमें साधुता ही न कही जाए। जिस संत में विशालता न हो, वह संत ही न कहा जाए और जिस संत में सर्वदेशीयता न हो, वो संत न कहा जाए। अध्यात्मानंदस्वामिजी में सरलता है, सर्वदेशीयता है, विशालता है। वर्ना आजकल तो स्वामिनारायण के संतों में संकुचितता आ गई है।

...आप पधारे, आप तो हमारे ही हो। इससे विशेष और कुछ कहने की जरुरत नहीं है। लेकिन भक्तों को बहुत आनंद हुआ। ऐसा ही आनंद बार-बार देते रहना...

प.पू. हरिभाई साहेब (माणावदर)

अध्यात्मानन्दजी तो हमें विद्यानगर में ज्यादा मिलते हैं। साहेब का जब कोई भी बड़ा फंक्शन होता है, तो वहाँ अचूक आते हैं। अहमदाबाद में उनका बड़ा आश्रम है। लेकिन जल जैसा निर्मल साधु है, लिक्विड फॉर्म में रहता है। जल को तुम लोटे में डालो, कप में डालो, प्याले में डालो–उसका आकार ले लेता है। उसी जल की बनी बर्फ का उपयोग करना हो, तो उसे काटना पड़ता है। **निर्मलस्वामिजी सबके प्रति समभाव रखने वाले मोस्ट प्रेक्टिकल संत हैं।** उनकी 'वड़ताल' के संतों से बहुत बनती है... सो, उनके प्रति सबको सद्‌भाव है कि निर्मल जैसा कोई संत नहीं। **वे रियल बात करते हैं; ऐसा नहीं कि अच्छा लगाने के लिए बोलते हैं।** वो कौन बोल सकता है? जो फियरलेस है। फियरलेस होना बड़ी बात है। वर्ना मैं यहाँ बोलूंगा तो *'ये लोग ऐसा सोचेंगे, ये बोलूंगा तो ये लोग वैसा सोचेंगे'*–वो फियर है। जो ऐसा सोचता है, वो इनर कन्वीक्शन से नहीं बोलता।

...आज ये सारा योगी परिवार और बॅप्स अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था जो है, वो योगी बापा का ही संकल्प है और वो आगे बढ़ रहा है।

...योगीजी महाराज ने जब हरिप्रसादस्वामी को गोंडल में शरदपूर्णिमा के दिन दीक्षा दी, तब आशीर्वाद दिए–

'जैसी स्वामिनारायण भगवान ने डभाण में गुणातीत को दीक्षा दी थी, ऐसी दीक्षा आज हम दे रहे हैं।' कम्पेरीज़न करो कि कौन दे रहा था? वहाँ उस समय महाराज खुद साकार ब्रह्म गुणातीत को दे रहे थे और (अब यहाँ) योगीजी महाराज द्वारा हरिप्रसादस्वामी को दी जा रही थी। देने वाला कौन है?–यह इनडायरेक्ट उन्होंने बोल दिया। जो समझ पाए, वो समझ पाए...

ऐसे ही भादरा में मूर्तिप्रतिष्ठा होने वाली थी। तो बापा ने बोला कि ये साकार ब्रह्म-गुणातीत का प्राकट्य स्थान है। यहाँ अक्षरसहित पुरुषोत्तम का वास होगा, तो उन्हें ग्यारह तोपों की सलामी दें। बापा बोले– *राजकोट के पुलिस डिपार्टमेन्ट को मिलो कि हमारा ऐसा प्रोग्राम है, ग्यारह तोपों की सलामी देनी है।* डी.एस.पी. के ऑफिस में जाकर बताया कि गोंडल 'अक्षरदेरी' से योगी महाराज ने भेजा है और सारी बात करी। अफसर तो बाहर गए थे, पर जब वे देर रात को आए, तो सब सुन कर कहा कि *ऐसे ग्यारह तोपों की सलामी हम दे नहीं सकते। खुद राष्ट्रपति आने वाले हों और हमें खुद ऑर्डर मिलता है, तो हम ऐसा कर सकते हैं। पर, ऐसे फंक्शन में हम कर नहीं सकते।* सो, वो वापिस आ गए। बापा को बताया कि ऐसा हुआ है। अगले दिन बापा ने घनश्याम बापू को कहा– *तुम डी.एस.पी. साहब (मिस्टर पीलै) को जाकर मिलो और बोलो कि भई! हमारा ये कार्यक्रम है, उसमें ग्यारह तोपों का मान मिलना चाहिए। हमें आप लोगों का मान मिलना चाहिए।* उसी समय वे गए तो पता चला कि साहब तो बाहर गए हैं। यहाँ तो आने वाले हैं ही नहीं। अगर आएंगे, तो बहुत लेट घर पर आएंगे। फिर भी घनश्याम बापू उनके घर जाकर बैठे। थोड़ी महिमा की बातें करीं... उनकी पत्नी बोलीं कि *वे तो अभी आएंगे नहीं।* फिर पूछा कि *आराम में कब जाते हैं?* वो बोलीं कि *उनके आराम का कोई भरोसा नहीं है, कब आते हैं और कब खाना खाते हैं। उनको अनिद्रा का रोग है। उनका डॉक्टर आएगा और उन्हें इन्जेक्शन देगा, तब वे आराम कर पाएंगे।* यह सुन कर घनश्याम बापू बोले– *दवा तो हमारे पास है।* फिर वो बोलीं– *साहेब को मिल कर जाओ।* साहेब आए और सारी बात करके कहा कि *कल दवा लेकर आता हूँ।* उन्होंने जाकर बापा को कहा– *'हुं हुंडी फाड़ीने आव्यो छुं'*–यूँ सारी बात करी तो बापा ने बोला– *अक्षर देरी का प्रसादी का पानी उनको देकर आओ।* अगले दिन जाकर उनकी पत्नी को दिया और कहा कि *रात को साहब का सोने का समय हो, तब एक गिलास पानी में इसमें से एक चम्मच डालकर हिला कर दे देना।* उन्होंने सोचा कि ये तो सिम्पल वॉटर है इससे कुछ होगा या नहीं। फिर भी चलो आजमा कर तो देखें! जब साहब आए और डॉक्टर आए, तो वो बोली कि जरूरत नहीं है; आज एक ग्लास पानी आप पी लो। प्रसादी का जल, पानी के एक गिलास में डाल कर, पीलै साहब पी गए और जैसे इंजेक्शन देने के बाद सो जाते थे, वैसे सो गए। फिर घनश्याम बापू बोल कर गए कि *अब तीन दिन के बाद आऊँगा।* तीन दिन के बाद गए, तो साहेब बोले कि *हमारा काम हुआ, तो तुम्हारा काम भी करना पड़ेगा।* सो, उसका

कोई रास्ता निकालते हैं। उन्होंने सारा कार्यक्रम अपने एसिस्टन्ट को बताया कि *सुबह पांच बजे नदी के सामने मूर्ति प्रतिष्ठा है।* तो, वे बोले कि *हम वहाँ ग्यारह तोपें लेकर जाएंगे और आप टाईम से सिग्नल देना और ग्यारह तोपों की सलामी देकर वापिस चले आएंगे।* बारह बजे बैरक में से तोपें निकलीं और पांच बजे कार्यक्रम पूरा करके वापिस बैरक में चली गईं। सब कहने लगे कि *बम फोड़ा। बम फोड़ा नहीं, ये तो आवाज ज्यादा है। बम की आवाज ऐसी नहीं होती है;* यूं, वो काम पूरा हो गया, वर्ना ऑफिशियली तो कुछ नहीं कर सकते थे।

...**गुरुजी** को मैंने व्हाईट कपड़े में देखा है और **साधु बने** उसके बाद भी देखा है। वो साधु बनना नहीं चाहते थे कि *मेरा काम नहीं है...* पर, **काकाजी का बड़ा योग था, काकाजी से ज्यादा पूज्य सोनाबा का।** उनके प्रति उनको खूब लगाव था। 6–डी में वो नहीं मिलते थे, मगर 8–सी में रोज उनका आना-जाना था। **पूज्य बा के संकल्प और प्रेम ने उनको साधु बनाया... किसी साधना से ऐसी प्राप्ति नहीं होती। काकाजी की ग्रेस! इसको बोलते हैं– 'शक्तिपात से मिलता है।' अपने आप बड़े पुरुष दे दें कि *जाओ मजा करो।*** जैसे करोड़पति व्यक्ति अपनी मर्जी से दे देता है।

ऐसे योग में हम आ गए हैं। तो, हम सब सेईलींग इन धी सेईम बोट। न कोई आगे है न कोई पीछे है। ये डाईनेमिक बोट है। अगर तुम उसमें से उतर गए, तो भी तुम्हारा काम रुकेगा नहीं। **उनका संकल्प एक जन्म नहीं, साल-दो साल, पांच-दस साल काम नहीं करेगा, परमॅनन्ट काम करता रहेगा। कहाँ तक? जिसने हम में संकल्प बोया है, उनके जैसी स्थिति हमारी न हो जाए तब तक!** उनके संकल्प का ऐसा फोर्स लगा ही रहेगा–लगा ही रहेगा। वो संकल्प हमें आगे ले ही जाएगा। **जितना साथ देंगे, उतनी हमारी साधना आसान रहेगी।** साथ नहीं देंगे, तो जैसे बापा बोलते थे– *जीवने जावुं हशे बीजे-त्रीजे रे, तो जावुं पडशे रीझे-खीझे रे...*। सरलता से जाना हो तो यूं चलो, वर्ना रीझे-खीझे तो जाना ही पड़ेगा! चोइस इज़ अवर्स।

हमें सुख-सुख से साधना करनी है, आनंद से करनी है और जीतेजी अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद अपने जीवन में बना रहे–ऐसी प्राप्ति करनी है। इसके लिए हमारा मन तैयार हो जाए–यही गुरुजी के प्राकट्य दिन की प्रार्थना!

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

शेष अगले अंक में...

❋ विज्ञप्ति ❋

मंदिर का अधूरा निर्माण कार्य फिर से शुरू होने के कारण

अब की–इस साल

'बड़े घर दीवाली शिबिर' नहीं होगी...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 19.9.'09,	शनिवार	— नवरात्रे प्रारंभ
(2)	दि. 28.9.'09,	सोमवार	— **दशहरा**, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(3)	दि. 30.9.'09,	बुधवार	— एकादशी, व्रत
(4)	दि. 1.10.'09,	गुरुवार	— परम पूज्य दिनकरभाई का प्राकट्य दिन
(5)	दि. 2.10.'09,	शुक्रवार	— मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(6)	दि. 4.10.'09,	**रविवार**	— **शरद्पूर्णिमा**, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(7)	दि. 6.10.'09,	मंगलवार	— ब्रह्मस्वरूप प.पू. जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(8)	दि. 14.10.'09,	बुधवार	— एकादशी, व्रत
(9)	**दि.15.10.'09,**	**गुरुवार**	— **धनतेरस** **अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा' – सायं 7:00 से 9:00**
(10)	दि. 16.10.'09,	शुक्रवार	— काली चौदस
(11)	**दि.17.10.'09,**	**शनिवार**	— **दीवाली** **अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन' – सायं 6:15 से 8:00**
(12)	**दि.18.10.'09,**	**रविवार**	— **अन्नकूटोत्सव** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – सुबह 9:30 से 11:00** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:30 बजे**
(13)	दि. 19.10.'09,	सोमवार	— **नूतन वर्ष–विक्रम संवत २०६६ प्रारंभ, भैयादूज**
(14)	दि. 23.10.'09,	शुक्रवार	— **लाभपंचमी**
(15)	दि. 29.10.'09,	गुरुवार	— प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ
(16)	दि. 2.11.'09,	सोमवार	— **देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052